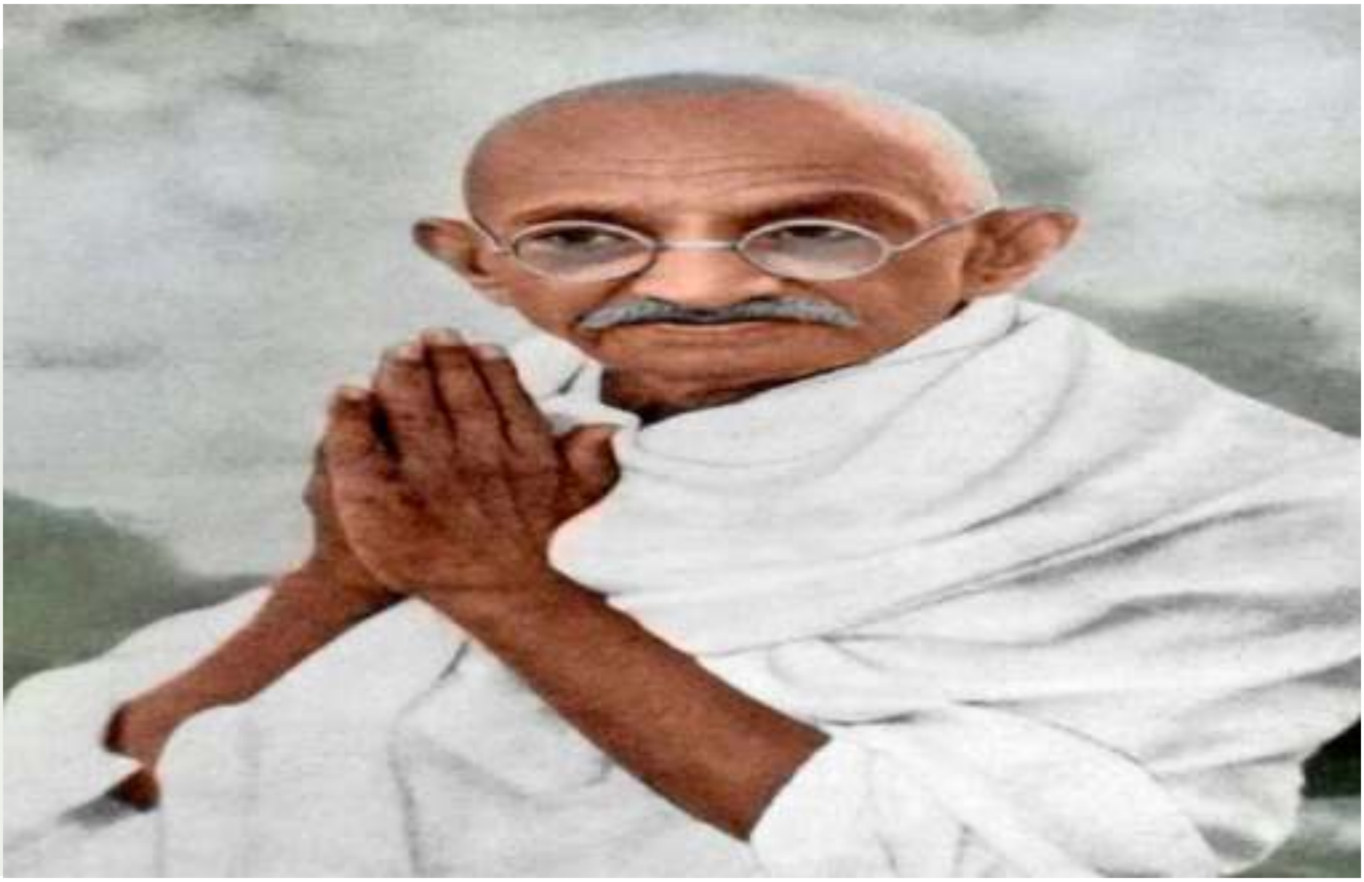

करना है। गाँधी जी तीन लोगों के साथ मुसोलिनी से मिलने गये, जब कि वहाँ कुर्सियाँ सिर्फ दो थीं। जब मुसोलिनी ने गाँधी जी से बैठने का आग्रह किया तो गाँधी जी ने अपने साथ आये तीनों लोगों को कुर्सी की तरफ इशारा करते हुये बैठने को कहा। मुसोलिनी का सोचना था कि कुर्सी पर सिर्फ गाँधी जी और वो बैठेगा, पर गाँधी जी अपने साथ के तीन अन्य मेहमानों की खातिर कुर्सी पर बैठने को राजी नहीं हुये और अन्ततः मुसोलिनी को तीन अन्य कुर्सियाँ मँगवानी पड़ी। वाकई यह रोचक घटनाक्रम दुनिया के सबसे बड़े तानाशाह और एक अहिंसक सत्याग्रही के बीच घटा था, जिसने तानाशाह को एक सत्याग्रही की बात मानने पर मजबूर कर दिया।

गाँधी जी स्वदेशी के प्रबल समर्थक थे। वे जानते थे कि असली भारत गाँवों में बसता है, जिसके आर्थिक स्वावलम्बन की रीढ़ कुटीर व लघु उद्योगों पर टिकी हुयी है। गाँधी जी का चरखा कातना प्रतीकात्मक रूप में स्वदेशी व स्वावलम्बन का ही प्रतीक था। स्वदेशी को बढ़ावा देने के लिए ही वे विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान करते थे। गाँधी जी सिर्फ राजनैतिक व्यक्ति नहीं बल्कि एक रचनात्मक समाज सुधारक भी थे। अस्पृश्यता, नारी सुधार, हिन्दू-मुस्लिम एकता इत्यादि के लिए उन्होंने बहुत कार्य किये। अस्पृश्यता को मानवता पर कलंक बताते हुये उन्होंने इसके उन्मूलन पर जोर दिया व तद्नुसार अछूतों को सम्मानजनक ‘हरिजन’ नाम देने, हरिजन सेवक संघ की स्थापना, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अस्पृश्यता के विरुद्ध लिखना एवं देशव्यापी भ्रमणों के दौरान अछूतों की बस्तियों में जाकर उनको गले लगाकर अस्पृश्यता को अवैज्ञानिक व अमानवीय सिद्ध करने जैसे अप्रतिम कदम उठाये। गाँधी जी के मन में नारी के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। वे नारी को पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह व बहु-विवाह जैसी मान्यताओं से बाहर निकालना चाहते थे और उनके आह्वान पर न सिर्फ तमाम नारियों ने पर्दा-प्रथा से बाहर निकल कर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया बल्कि औरों को भी जागृत किया। नारी उत्थान हेतु गाँधी जी ने शिक्षा, अन्तर्जातीय विवाह व विधवा विवाह पर जोर दिया। उनका मानना था कि जब तक नारी अपने अधिकारों हेतु स्वयं आगे नहीं आयेगी, तब तक उसकी स्थित में परिवर्तन नहीं होगा।

गाँधी जी धर्म व सम्प्रदाय में भेद करते थे। धर्म उनके लिये कर्मकाण्डों से नहीं अपितु मानवीय व नैतिक गुणों से निर्मित था। वे राजनीति व धर्म के सहअस्तित्व को स्वीकार करते हुये दोनों के लिए सत्य, अहिंसा, त्याग, विश्वबन्धुत्व, आत्मविश्वास व नैतिकता को जरूरी मानते थे। साधन और साध्य दोनों की पवित्रता पर जोर देते हुये वे किसी भी प्रकार के छल कपट या अनुचित तरीकों को पसन्द नहीं करते थे। अंग्रेजों की ‘फूट डालो और राज करो’ नीति के विपरीत गाँधी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। 1919 में खिलाफत आन्दोलन के दौरान उन्होंने इसे हिन्दुओं व मुसलमानों के मध्य एकता स्थापित करने का ऐसा सुअवसर बताया जो कि आगे सौ वर्षों तक नहीं मिलेगा। हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रति गाँधी जी का आग्रह

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-8-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 126
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

इसी से समझा जा सकता है कि जब 15 अगस्त 1947 को सारा देश आजादी के जश्न में डूबा था तो गाँधी जी साम्प्रदायिक दंगों को खत्म करने के लिए नोआखली में पद यात्रा कर रहे थे। वस्तुतः गाँधी जी के लिए स्वतंत्रता का स्वरूप सिर्फ राजनैतिक नहीं था, अपितु यह लोगों की सामाजिक, आर्थिक व आत्मिक उन्नति भी थी, जिसे वे 'राम-राज्य' कहा करते थे।

आज गाँधी जी के विचार पूरे विश्व में सर्वग्राह्य हैं। बीबीसी द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण के मुताबिक आज भी पाश्चात्य देशों में भारत की एक प्रमुख पहचान गाँधी जी हैं। यही नहीं तमाम पाश्चात्य देशों में गाँधीवाद पर विस्तृत अध्ययन हो रहे हैं, तो भारत में सुन्दरलाल बहुगुणा, अन्ना हजारे, मेघा पाटेकर, अरूणा राय से लेकर संदीप पाण्डे तक तमाम ऐसे समाजसेवियों की प्रतिष्ठा कायम रही है, जिन्होंने गाँधीवादी मूल्यों द्वारा सामाजिक आन्दोलन खड़ा करने की कोशिशें कीं। आँकड़े गवाह हैं कि विश्व भर में हर साल गाँधी जी व उनके विचारों पर आधारित लगभग दो हजार पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है एवम् हाल के वर्षों में गाँधी जी की कृतियों का अधिकार हासिल करने के लिये प्रकाशकों व लेखकों के आवेदनों की संख्या दो गुनी हो गई है। वस्तुतः आज जरूरत गाँधीवाद को समझने की है न कि उसे आदर्श मानकर पिटारे में बन्द कर देने की। स्वयं गाँधी जी का मानना था कि आदर्श एक ऐसी स्थिति है जिसे कभी भी प्राप्त नहीं किया जा सकता बल्कि उसके लिए मात्र प्रयासरत रहा जा सकता है। कभी आर्नल्ड टाॅयनबी ने कहा था - ''मैं जिस पीढ़ी में पैदा हुआ, वह पीढ़ी पश्चिम में केवल हिटलर अथवा स्तालिन की ही पीढ़ी नहीं थी अपितु भारत में गाँधी जी की भी पीढ़ी थी। हम निश्चयपूर्वक यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि मानव इतिहास पर गाँधी जी का प्रभाव हिटलर और स्तालिन के प्रभाव से अधिक होगा।'' आज की नयी पीढ़ी गाँधी जी को एक नए रूप में देखना चाहती है। वह उन्हें एक सन्त के रूप में नहीं वरन् व्यवहारिक आदर्शवादी के रूप में प्रस्तुत कर रही है।

वस्तुतः सत्य, प्रेम व सहिष्णुता पर आधारित गाँधी जी के सत्याग्रह, अहिंसा व रचनात्मक कार्यक्रम के अचूक मार्गों पर चलकर ही विश्व में व्याप्त असमानता, शोषण, अन्याय, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, दुराचार, नक्सलवाद, पर्यावरण असन्तुलन व दिनों-ब-दिन बढ़ते सामाजिक अपराध को नियंत्रित किया जा सकता है। गाँधी जी द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम के जरिए विकल्प का निर्माण आज पूर्वोत्तर भारत व जम्मू-कश्मीर जैसे क्षेत्रों की समस्याओं, नक्सलवाद व घरेलू आतंकवाद से निपटने में जितने कारगार हो सकते हैं उतना बल-प्रयोग नहीं हो सकता। गाँधी जी दुनिया के एकमात्र लोकप्रिय व्यक्ति थे जिन्होंने सार्वजनिक रूप से स्वयं को लेकर अभिनव प्रयोग किए और आज भी सार्वजनिक जीवन में नैतिकता, आर्थिक मुद्दों पर उनकी नैतिक सोच व धर्म-सम्प्रदाय पर उनके विचार प्रासंगिक हैं । तभी तो भारत के अन्तिम वायसराय लार्ड माउण्टबेन ने कहा था-''गाँधी जी का जीवन खतरों से भरी इस दुनिया को हमेशा शान्ति और अहिंसा के माध्यम से अपना बचाव करने की राह दिखाता रहेगा।''

कृष्ण कुमार यादव, पोस्टमास्टर जनरल
वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी-221002
मो0- 09413666599

रौद्र नाद

गिरेन्द्र सिंह भदौरिया "प्राण"

हे पाखण्ड खण्डिनी कविते ! तापिक राग जगा दे तू।
सारा कलुष सोख ले सूरज। ऐसी आग लगा दे तू।।
कविता सुनने आने वाले। हर श्रोता का वन्दन है।
लेकिन उससे पहले सबसे। मेरा एक निवेदन है।।

आज माधुरी घोल शब्द के। रस में न तो डुबोऊँगा।
न मैं नाज नखरों से उपजी। मीठी कथा पिरोऊँगा।।
न तो नतमुखी अभिवादन की। भाषा आज अधर पर है।
न ही अलंकारों से सज्जित। माला मेरे स्वर पर है।।

न मैं शिष्टतावश जीवन की। जीत भुनाने वाला हूँ।
न मैं भूमिका बाँध बाँध कर। गीत सुनाने वाला हूँ।।
आज चुहलबाज़ियाँ नहीं। दुन्दुभी बजाऊँगा सुन लो।
मृत्यु राज की गाज काल भैरवी सुनाऊँगा सुन लो।।

आज हृदय की तप्त बीथियों। में भीषण गर्माहट है।
क्योंकि देश पर दृष्टि गड़ाए। अरि की आगत आहट है।।
इसीलिए कर्कश कठोर वाणी का यह निष्पादन है।
सुप्त रक्त को खौलाने का। आज विकट सम्पादन है।।

कटे पंख सा विवश परिन्दा। मन के भीतर जिन्दा है।
कुछ लोगों के कारण भारत। बुरी तरह शर्मिन्दा है।।
जितना खतरा नहीं देश को। दुश्मन के हथियारों से।
उससे ज्यादा भय लगता है। छिपे हुए गद्दारों से।।

ये इतने मतलब परस्त हैं। धर लें धन की पेटी को।
बदले में गिरबी रख सकते। हैं माँ बीवी बेटी को।।
दाँव लगे तो धरा धाम। परिवेश बेच सकते हैं ये।
क्षणिक स्वार्थ के लिए स्वर्ग सा। देश बेच सकते हैं ये।।

जासूसों की ठण्ड घटाने को। सिगड़ी रख देते ये।
गुस्ताखों की भूख मिटाने को। रबड़ी रख देते ये।।
देशद्रोहियों के मुख में मुर्गी तगड़ी रख देते ये।
जयचन्दों के अभिनन्दन में। झट पगड़ी रख देते ये।।

जिनकी सोच समझ पर कुण्ठा। के जाले पड़ जाते हों।
राष्ट्र गीत गाते ही अधरों पर ताले पड़ जाते हों।।
जिनकी शक्ल देखते रोटी। के लाले पड़ जाते हों।
कौओं की क्या कहूँ कबूतर। तक काले पड़ जाते हों।।

जिनको अन्तर नहीं सूझता। पापड़ और पहाड़ों में।
कौन शक्ति बलबती सोचते। भों भों और दहाड़ों में।।
उनकी चिन्ता नहीं मुझे वे। सुनें या कि अनसुना करें।
बैठें या फिर चले जाँय। घर पर जाकर सिर धुना करें।।

वही रहे नर नाहर जिसमें। सुनने का दम गुर्दा हो।
वरना चला जाय मजमें से। जिन्दा हो या मुर्दा हो।।
मैं आया हूँ वीरों की रग रग में रोश जगाने को।
कायर में ही नहीं नपुंसक। तक में जोश जगाने को।।

इतना है विश्वास कापुरुष। सुन लें मेरी वाणी को।
निश्चय ही तलवार उठा लेंगे कर में कल्याणी को।।
मेरी आग भरी वाणी से। दहक उठेगी यह दुनिया।
ज्वालाएँ बरसेंगी मुख से। धधक उठेगी यह दुनिया।।

जिन लपटों की लपक देख। थर्राती लोहे की छाती।
पिघल पिघल कर मोम सरीखी। पानी पानी हो जाती।।
उसी आग की चिनगारी को। बिछा रहा हूँ डग डग में।
कोशिश है भर दूँगा बाँके। वीरों की मैं रग रग में।।

मैं छन्दों में ढाल चुका हूँ। लावा ज्वालामुखियों का।
जबरदस्त आह्वान किया है। योद्धा सूरजमुखियों का।।
हिम्मत हो तो ही तुम सुनना। वरना जाना भाग कहीं।
कविता सुनने के चक्कर में। लगा न लेना आग कहीं।।

छोटे मुंँह से बड़ी बात बेशक तुमको चुटकुला लगे।
या आए इस सुप्त काल में। प्रलयंकर ज़लज़ला लगे।।
मेरी कविता तुम को चाहे। कला लगे या बला लगे।
यह भारत का रौद्र नाद है। बुरा लगे या भला लगे।।

कपटी मन के पेट दर्द की। जड़ी हमारे पास नहीं।
चाल भरी छल विद्या छोटी। -बड़ी हमारे पास नहीं।।
चलता समय रोक ले ऐसी। घड़ी हमारे पास नहीं।
छूमन्तर कर देने वाली छड़ी हमारे पास नहीं।।

इसीलिए इस शेष सभा को। काज बताने आया हूँ।
मैं यौवन के स्वर्ण काल का। राज बताने आया हूँ।।
तुम क्या हो तुम क्यों आये हो ? क्या करना मालूम नहीं।
कैसे जीना तुम्हें और कैसे मरना मालूम नहीं।।

इसीलिए इस ज्ञान खण्ड की शिक्षा। बहुत जरूरी है।
जन्म लिया जिस भू पर उसकी। रक्षा बहुत जरूरी है।।

हे बलिवीरो! उठो सुनो तुम जो चाहो कर सकते हो।
मात्र आत्म बल के बल पर तन में पौरुष भर सकते हो।।

तुम्हें किसी अदृश्य शक्ति ने जो सामर्थ्य परोसा है।
जिस के बल पर मातृभूमि को तुम पर अटल भरोसा है।।
जब तक तुम हो तब तक तय है। दुश्मन सफल नहीं होगा।
जीव जन्तु क्या जड़ चेतन का। जीवन विकल नहीं होगा।।

तुम चाहो तो कण कथीर के। कंचन कोहिनूर कर दो।
चट्टानों को दबा दबा कर। कर से चूर- चूर कर दो।।
पलक खोलते ही पल में। पाषाण पिघलने लग जाएँ।
एक फूँक में आँधी क्या। तूफान मचलने लग जाएँ।।

पाँव पटकते ही पानी की। धार धरा से फूट पड़े।
तुम चाहो तो इन्द्र बज्र सा। साहस अरि पर टूट पड़े।।
आत्मबली वीरों को किंचित। भय न किसी खाँ का होता।
बीच बैरियों के लड़ते हैं। बाल नहीं बाँका होता।।

सिर पर कफन बाँध कर चलना। व्रत होता रणधीरों का।
तभी साथ मिलता तूफानी। आंँधी और समीरों का।।
राष्ट्र यज्ञ में प्राणाहुति से। बड़ा और बलिदान नहीं।
इससे बढ़कर कीर्तिकाम का। कोई भी सम्मान नहीं।।

रात्रि घनी है जंग ठनी है। दीपक बनकर जलना है।
अँधियारों के बीच बैठकर। मुख से आग उगलना है।।
सुन लो राष्ट्र प्रेम के चिन्तन। का मन्तव्य समझते जो।
मातृभूमि की सेवा को। पहला कर्तव्य समझते जो।।

उनसे ही कह सकता हूँ मैं। मरने मिटने जीने की।
दुश्मन से लोहा लेने की। छक कर पीयूष पीने की।।
वीरों को मन से प्रणाम है। मेरा बस इतना कहना।
दुश्मन घात लगाकर बैठे हैं। तुम चौकन्ने रहना।।

आज नहीं तो कल इन हालातों से पाला पड़ना है।
हमें युद्ध दोगलों और। दुश्मन दोनों से लड़ना है।।
इसीलिए हर प्रहर कमर पर काल बाँध कटिबद्ध रहो।
क्या जाने कब बैरी कर दे। हमला तुम सन्नद्ध रहो।।

गिरेन्द्र सिंह भदौरिया "प्राण"

लघुकथाएँ

नीरू मित्तल 'नीर'

घोषणा

चुनाव आते ही जन मन लुभावन घोषणाओं का दौड़ शुरू हो गया-
"हम सब को मुफ्त बिजली देंगे"
"तो हम पानी मुफ्त देंगे"
"हम गरीब बच्चों को ऑनलाइन क्लासेज के लिए स्मार्टफोन देंगे"
"गरीब बच्चों को पढ़ाई के लिए हम लैपटॉप देंगे"
"हम गरीबों को मुफ्त का स्कूटर देंगे"
"महिलाओं के लिये बस यात्रा मुफ्त कर देंगे"
एक गरीब ने ही सवाल कर दिया- "हुजूर... स्कूटर तो आप दे दोगे लेकिन पेट्रोल कौन देगा? और जो स्कूटर, लैपटॉप, मोबाइल आप देंगे उन सब की कीमत बाद में कर लगा कर हम से ही तो नहीं वसूलोगे?"

प्रतिज्ञा

"मैं कुछ टेस्ट लिख कर दे रहा हूँ, वर्मा डायग्नोस्टिक सेंटर से करा लेना, रिपोर्ट मैं अपने आप मंगा लूँगा। तब तक आप इन्हें यह दवाइयां दीजिए, सामने वाले केमिस्ट से मिल जाएंगी। पांच दिन बाद आकर दिखा देना।"

डॉक्टर साहब को हाथ जोड़कर कामिनी अपने पति को लेकर बाहर आ गई। डॉक्टर से मिलने आए दोस्त ने कहा- "जब इसकी बीमारी साफ़ पता चल रही है और दवाई भी यही देनी है तो टेस्ट करवाने की क्या ज़रूरत है?"

"देख आलोक, मेरे पास तेरी तरह सरकारी नौकरी नहीं है। यहाँ थोड़े ही मरीज़ आते हैं। हर एक को कुछ टेस्ट लिख देता हूँ, वर्मा डायग्नोस्टिक में मेरे मार्क किए हुए टेस्ट ही होते हैं, बाकी टेस्ट होते ही नहीं और मुझे सभी का पचास प्रतिशत कमीशन मिल जाता है। यहाँ ऐसे ही चलता है।"

आलोक को डॉक्टरी की डिग्री लेते समय की जाने वाली प्रतिज्ञा याद आ गई।

*****

अनुकरणीय भगवान् श्री राम

'रमणे कणे कणे इति राम'
जो कण कण में बसे , वही राम है . श्री राम के विषय में सनातन धर्म में अनेक कथायें एवं गाथायें विद्यमान हैं .श्री राम जी के जीवन की अनुपम कथायें , महर्षि वाल्मीकि जी ने अत्यंत सुंदर शब्दों में रामायण मे प्रस्तुत किया है . इसके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी में रामचरितमानस की रचना करके उसे जन जन के ह्रदय तक पहुंचा दिया .

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम का चरित्र अनुकरणीय है . उनका पूरा जीवन आदर्श और प्रेरणा से पूर्ण है . इस धरा पर अवतरित होकर उन्होंने साधु संतों तथा अपने भक्तों की रक्षा की तथा सत्य के मार्ग पर चलने का संदेश दिया . उनके बताये मार्ग का अनुकरण करके ही हम लोग अपना , समाज और राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं .और साथ में आपसी एकता और अखंडता को बनाकर रख सकते हैं .

श्री राम कर्तव्यनिष्ठ हैं . पिता की आज्ञा का पालन करने के लिये राजगद्दी को त्याग कर वनगमन को स्वीकार कर लिया .

श्री राम जी का मधुर स्वभाव है एवं सरस भाषी हैं.

श्री राम जी ने माता पिता का सम्मान करने का आदर्श प्रस्तुत किया है . भ्रातृ प्रेम का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करते हुये भरत जी के प्रति उनका अटूट विश्वास और प्रेम उनके चरित्र द्वारा देखने को मिलता है .

राम जी ने गुरु की महत्ता को अपने दैनिक जीवन के द्वारा प्रदर्शित किया है . यहाँ तक कि गुरु ही जीवन के अंधकार को मिटाने का मार्गदर्शन कर सकता है .

राम जी ने कठिन से कठिन परिस्थिति में धैर्य को नहीं खोया है .

मानस में कहा है बड़े भाग मानुस तन पावा .... अर्थात मनुष्य का शरीर बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है क्योंकि इसी जीवन में अपने कर्मों के द्रवारा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं

वर्तमान संदर्भों में भी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के आदर्शों का जनमानस पर गहरा प्रभाव है . त्रेतायुग में भगवान् श्री राम से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं, उनसे उत्तम कोई व्रत नहीं , कोई श्रेष्ठ योग नहीं , कोई उत्कृष्ट अनुष्ठान नहीं . उनके महान् चरित्र की वृत्तियाँ जनमानस के मन को शांति और आनंद उपलब्ध करवाती हैं

संपूर्ण भारतीय समाज के जनमानस में एक समान रूप से आदर्श के रूप में भगवान् श्री राम को उत्तर से दक्षिण तक स्वीकार करके पूज्य माना जाता है . उनका तेजस्वी एवं पराक्रमी स्वरूप भारत की एकता का प्रत्यक्ष चित्र उपस्थित करता है .

आदिकवि वाल्मीकि ने उनके संबंध में लिखा है कि वे गांभीर्य में उदधि के समान और धैर्य में हिमालय के समान हैं . राम जी के चरित्र में पग पग पर मर्यादा , त्याग , प्रेम और लोकव्यवहार के दर्शन होते हैं . राम ने साक्षात परमात्मा होकर भी मानव जाति को मानवता का संदेश दिया . उनका पवित्र चरित्र लोकतंत्र का प्रहरी उत्प्रेरक और निर्माता भी है . इसीलिये भगवान् राम के आदर्शों का जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव है और युगों युगों तक रहेगा .

सर्वोच्च संरक्षक विष्णु के अवतार श्री राम

सदा ही हिंदू देवताओं के बीच लोकप्रिय रहे . राम शिष्टाचार और सदाचार के प्रतीक हैं, जो मूल्यों और नैतिकता के उदाहरण हैं . श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं , जिसका अर्थ है.. मर्यादा का पालन करने वाला ..उन्होंने सदा ही मर्यादा का पालन किया . वह सिद्ध पुरुष थे .. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार श्री राम ने उस युग की राक्षसी वृत्तियों अथवा बुरी शक्तियों को नष्ट करने के लिये इस धरती पर जन्म लिया था .

देवता के रूप में .... भगवान् राम स्वामी विवेकानंद के शब्दों में सत्य का अवतार , नैतिकता का आदर्श पुत्र , आदर्श पति और सबसे बढ कर आदर्श राजा हैं , जिनके कर्म उन्हें ईश्वर की श्रेणी में खड़ा करते हैं .

वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण एक महान् हिंदू महाकाव्य है . हिंदू धर्म की मान्यता के अनुसार राम का जन्म त्रेता युग में हुआ था . वाल्मीकि रचित रामायण संस्कृत भाषा में थी ...गोस्वामी तुलसीदास ने इसी कथा को अवधी भाषा में रामचरितमानस के नाम से रच कर जन जन के मानस तक पहुंचा दिया . इस अद्भुत रचना ने महान् हिंदू देवता के रूप में श्री राम को जनमानस पर प्रतिष्ठित कर दिया ...राम जी की लोकप्रियता को बहुत बढा दिया और विभिन्न भक्ति समूहों को जन्म दिया .राम जी का चरित्र .... श्री राम सद्गुणों की खान थे . वह न केवल दयालु और स्नेही थे वरन् उदार और सहृदयी भी थे . भगवान् राम के पास एक अद्भुत शारीरिक और मनोरम शिष्टाचार था . श्री राम का व्यक्तित्व अतुल्य और भव्य था . वह अत्यंत महान् ,उदार , शिष्ट और निडर थे . वे बहुत सरल स्वभाव के थे .

आदर्श उदाहरण.... भगवान् राम को दुनिया में एक आदर्श पुत्र के रूप जाना जाता है एवं अच्छे गुणों के प्रत्येक पहलू में वह श्रेष्ठ प्रतीत होते हैं . उन्होनें अपने पूरे जीवन में कभी झूठ नहीं बोला ... वह हमेशा विद्वानों और गुरुजनों के प्रति सम्मान की दृष्टि से पेश आते थे .लोग उनसे स्नेह करते थे और उन्होंने सभी लोगों को बहुत प्रेम और आदर दिया . उनका व्यक्तित्व पारलौकिक और उत्कृष्ट था . वे परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को समायोजित कर लेते थे . वह सर्वज्ञ होने के कारण प्रत्येक मनुष्य के हृदय की भावनाओं को जानते और समझते थे . वह राजा के पुत्र थे और उनके अंदर राजा के सभी बोधगम्य गुण थे और वह लोगों के दिलों में वास करते थे .

भगवान् राम अविश्वसनीय अलौकिक गुणों से संपन्न ....भगवान् राम अविश्वसनीय पारमार्थिक गुणों से संपन्न थे .वह गुणों की खान थे . उनमें अदम्य साहस और पराक्रम था . और वह सभी के लिये अप्रतिम भगवान् के रूप में थे . एक सफल जीवन जीने के लिये , श्री राम के जीवन का अनुकरण करना श्रेयस्कर उपाय है . श्री राम का जीवन एक पवित्र अनुपालन का जीवन , अद्भुत बेदाग चरित्र , अतुलनीय सादगी ,प्रशंसनीय संतोष , सराहनीय आत्म बलिदान एवं उल्लेखनीय त्याग का जीवंत उदाहरण है श्री राम हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार आदर्श पुरुषों में गिने जाते हैं , पुराणों में उन्हें श्रेष्ठ राजा कहा गया है . उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है. वह मनुष्य रूप में जन्मे और ऋषि विश्वामित्र से विद्योपार्जन के उपरांत पृथ्वी पर अनेकानेक राक्षसों का संहार किया . सत्य , धर्म , दया और मर्यादा पर चलते हुये राज किया . उन्होंने जिस तरह राज किया , उसे आज भी रामराज्य कह कर याद किया जाता है . हमारी संस्कृति और सदाचार की जब भी बात होती है तो श्री राम का नाम लिया जाता है . आज भी बड़े बुजुर्ग के मुंह से सुनने को मिलता है कि बेटा हो तो राम जैसा .... राजा हो तो राम जैसा .....

पद्मा अग्रवाल

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

(1)

वो बहुत रंगीन होता जा रहा है,
मामला संगीन होता जा रहा है।

देख मत आँखों पर रख ले हाथ तू भी,
या खुदा क्या सीन होता जा रहा है।

जिंदगी तूने गुजारी शान से जब,
क्यों अभी यूँ दीन होता जा रहा है।

देख कर नागिन सपेरा खुद यहाँ तो,
झूम कर वो बीन होता जा रहा है।

अब मोहब्बत को नहीं मानो खुदा तुम,
प्रेम भी अब हीन होता जा रहा है।

देखने को दूसरों की वह बुराई,
वो खुदी दूरबीन होता जा रहा है।

(2)

जिंदगी की मुश्किलों से हम कभी डरते नहीं,
लडखडा कर हम कभी भी राह में गिरते नहीं।

सच कहूँगा जब तलक जिंदा रहूँगा दोस्तों,
मौत से हम क्यों डरेंगे लोग क्या मरते नहीं।

मुस्करा के जीत लो जी दिल किसी का आप भी,
है मगर अफ़सोस हमको आप यूँ करते नहीं।

प्यार करते हो किसी से तो उसे स्वीकार कर,
जिंदगी भर सिसकियाँ यूँ प्यार में भरते नहीं।

जिंदगी से प्यार है तो मौत को भी कर नमन,
आप स्वागत् मौत का क्यों झूम कर करते नहीं।

डॉ. राजीव गुप्ता

'न्याय और नमक की कीमत सनातन के संदर्भ में'

भीष्म पितामह ने धृतराष्ट्र का नमक खाया था, जैसा कि उल्लिखित है, तो उन्हें नमक की कीमत अदा करनी थी, नहीं तो असभ्य-अशिष्ट-अहंकारी दुर्योधन उन्हें नमक-हराम कहता , भीष्म पितामह को यह भय जीवन के अन्त तक रहा। भीष्म पितामह अपने समय के सबसे बड़े योद्धा थे और सबसे बड़े तत्वज्ञानी भी। सबसे बड़े ज्ञानी हैं पर अन्याय-अधर्म की ओर से नमक की कीमत अदा करने का संकल्प लिया है।

अगर नीति कहती है कि युद्ध में सब-कुछ जायज़ है,यह कथन भी ख़ूब प्रचलित है, लेकिन यह कथन मूल रूप में भारतीय आत्मा से नहीं जुड़ता है। वास्तविक कथन तो यह है कि "इश्क़ और ज़ग में सब कुछ जायज है", जो भारतीयता से मेल नहीं खाता है। इश्क़ और प्रेम में भी अंतर है, तथा दुनिया के अन्य देशों का ज़ग भी भारतीय युद्धों से अलग है। इश्क़ प्रेम नहीं है। हमारी संस्कृति में तो प्रेम में मर्यादा होती है, पर पश्चिम के इश्क़ में नहीं। हमारे यहाँ युद्ध में नियम होता था,पर जो आक्रांता थे उनके ज़ग में नियम कदापि नहीं। इसलिए पश्चिमी दर्शन का 'इश्क़ और ज़ग में सब कुछ जायज है' यह भारतीय संस्कृति और परिवेश में अनुचित कथन माना जायेगा।

यदि तत्कालीन परिस्थितियों में भारतीयता इस कथन को स्वीकार करती तो भीष्म पितामह इसका पालन भी ज़रूर करते।

अर्थात् पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार युद्ध/ लड़ाई जीतने के लिए दुश्मन के साथ हर व्यवहार उचित है, तो भीष्म पितामह द्वारा युद्ध के मैदान में अपने सामने शिखण्डी के दुश्मन बन कर आने पर शिखण्डी को तुरन्त मारना चाहिए था, नमक की कीमत वास्तव में अदा हो जाती और अर्जुन द्वारा भीष्म पितामह को मारने की नौबत ही नहीं आती।

भीष्म पितामह यदि पहले शिखण्डी को मारकर फिर अर्जुन को मार देते, तो अधर्म और असत्य की जीत होती और पूरे संसार का सत्य और धर्म से सदा-सदा के लिए विश्वास उठ जाता। जो कुछ भी हो भीष्म पितामह में भारतीय आत्मा थी। भारतीय सनातन तत्व को भली-भाँति समझते थे, उसे उन्होंने अपने जीवन में आत्मसात किया था। सत्य कभी भी पराजित नहीं होता है, सामान्य जन में यह विश्वास आज भी है कि समाज में किसी अन्यायी /अत्याचारी द्वारा सताये जाने पर कमजोर/असहाय लोगों के लिए जीने का एक बहुत बड़ा सहारा है, एक अवलम्ब है और एक शक्ति है।

यही भारतीयता है और यही सनातन होना है। शिखण्डी के सामने आ जाने पर सत्य और धर्म भीष्म पितामह के नमक की कीमत पर हावी हो ही जाते हैं। वासुदेव श्रीकृष्ण भी तो भीष्म पितामह के ज्ञान की कभी उपेक्षा नहीं कर सके थे, तो भला ज्ञान सत्य और धर्म की उपेक्षा कैसे करता ?

हमारे औपनिषदिक ग्रंथ कहते हैं कि "ईश्वर सत्य का जनक है, ईश्वर सत्य-स्वरूप है, ईश्वर सत्यात्मक है।" भीष्म पितामह ने सत्य की रक्षा कर ली शिखण्डी के सामने पड़ने पर हथियार डालकर और नमक की कीमत अदा की सैकड़ों बाणों से बिंधने के बाद शरशय्या पर जाकर। भीष्म पितामह ने शरशय्या पर पड़े -पड़े जीवन का वास्तविक अनुभव और ज्ञान भी दिया केवल युधिष्ठिर को, जो सच्चे अर्थों में उसके पात्र थे, किसी अपात्र को नहीं।

अपात्र / कुपात्र को तो अपने जीवन का वास्तविक अनुभव या किसी तरह का ज्ञान या उचित सलाह देने की मनाही है, ऐसा बूढ़े-बुज़ुर्ग कहते हैं, शास्त्र भी कहते हैं। इस प्रसंग को जानते तो सब हैं। काश् ! आज का ज्ञान और आज के ज्ञानी भी एक बार इसे आत्मसात करते।

शशिबिन्दु नारायण मिश्र

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : 978-81-963524-7-9

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 120

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

अंग्रेजों की आँख में धूल झोंक क्रांतिकारियों की रक्षक बनीं दुर्गा भाभी

दुर्गा भाभी की जयंती (7 अक्टूबर) पर

अंग्रेजों की आँख में धूल झोंक क्रांतिकारियों की रक्षक बनीं दुर्गा भाभी

वर्ष 1927 का दौर। साइमन कमीशन का विरोध करने पर लाहौर में प्रदर्शन का नेतृत्व करने वाले शेरे-पंजाब लाला लाजपत राय पर पुलिस ने निर्ममतापूर्वक लाठी चार्ज किया, जिससे 17 नवम्बर 1928 को उनकी मौत हो गयी। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में यह एक गंभीर क्षति थी। पूरे देश विशेषकर नौजवानों की पीढ़ी को इस घटना ने झकझोर कर रख दिया। लाला लाजपत राय की मौत को क्रान्तिकारियों ने राष्ट्रीय अपमान के रूप में लिया और उनके मासिक श्राद्ध पर लाठी चार्ज करने वाले लाहौर के सहायक पुलिस कप्तान साण्डर्स को 17 दिसम्बर 1928 को भगत सिंह, चन्द्रशेखर व राजगुरु ने खत्म कर दिया। यह घटना अंग्रेजी सरकार को सीधी चुनौती थी, सो पुलिस ने

आकांक्षा यादव,
पोस्टमास्टर जनरल आवास, वाराणसी

क्रान्तिकारियों पर अपना घेरा बढ़ाना आरम्भ कर दिया। ऐसे में भगत सिंह व राजगुरु को लाहौर से सुरक्षित बाहर निकालना क्रान्तिकारियों के लिये टेढ़ी खीर थी। ऐसे समय में एक क्रान्तिकारी महिला ने सुखदेव की सलाह पर भगतसिंह और राजगुरु को लाहौर से कलकत्ता बाहर निकालने की योजना बनायी और फलस्वरूप एक सुनियोजित रणनीति के तहत यूरोपीय अधिकारी के वेश में भगत सिंह पति, वह क्रान्तिकारी महिला अपने बच्चे को लेकर उनकी पत्नी और राजगुरु नौकर बनकर अंग्रेजी सरकार की आँखों में धूल झोंकते वहाँ से निकल लिये। यह क्रान्तिकारी महिला कोई और नहीं बल्कि चन्द्रशेखर आजाद के अनुरोध पर 'दि फिलॉसाफी ऑफ बम' दस्तावेज तैयार करने वाले क्रान्तिकारी भगवतीचरण वोहरा की पत्नी दुर्गा देवी वोहरा थीं, जो क्रान्तिकारियों में 'दुर्गा भाभी' के नाम से प्रसिद्ध थीं।

7 अक्टूबर 1907 को रिटायर्ड जज पं. बांके बिहारी लाल नागर की सुपुत्री रूप में इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में दुर्गा देवी का जन्म हुआ। कुछ समय पश्चात ही पिताजी सन्यासी हो गये और बचपन में ही माँ भी गुजर गयीं। दुर्गा देवी का लालन-पालन उनकी चाची ने किया। जब दुर्गादेवी कक्षा 5वीं की छात्रा थीं तो मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में ही उनका विवाह भगवतीचरण वोहरा से हो गया, जो कि लाहौर के पंडित शिवचरण लाल वोहरा के पुत्र थे। दुर्गा देवी के पति भगवतीचरण वोहरा 1921 के असहयोग आन्दोलन में काफी सक्रिय रहे और लगभग एक ही साथ भगतसिंह, धनवन्तरी और भगवतीचरण ने पढ़ाई बीच में ही छोड़कर देश सेवा में जुट जाने का संकलप लिया। असहयोग आन्दोलन के दिनों में गाँधी जी से प्रभावित होकर दुर्गा देवी और उनके पति स्वयं खादी के कपड़े पहनते और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करते। असहयोग आन्दोलन जब अपने चरम पर था, ऐसे में चौरी-चौरा काण्ड के बाद अकस्मात इसको वापस ले लिया जाना नौजवान क्रान्तिकारियों को उचित न लगा और वे स्वयं का संगठन बनाने की ओर प्रेरित हुये। असहयोग आन्दोलन के बाद भगवतीचरण वोहरा ने लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज से 1923 में बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की। दुर्गा देवी ने इसी दौरान प्रभाकर की परीक्षा उतीर्ण की।

1924 में तमाम क्रान्तिकारी 'कानपुर सम्मेलन' के बहाने इकट्ठा हुये और भावी क्रान्तिकारी गतिविधियों की योजना बनायी। इसी के फलस्वरूप 1928 में 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन' का गठन किया गया, जो कि बाद में 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन' में परिवर्तित हो गया। भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, राजगुरु, भगवतीचरण वोहरा, बटुकेश्वर दत्त, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह व अशफाक उल्ला खान, शचीन्द्र नाथ सान्याल इत्यादि जैसे तमाम क्रान्तिकारियों ने इस दौरान अपनी जान हथेली पर रखकर अंग्रेजी सरकार को कड़ी चुनौती दी। भगवतीचरण वोहरा के लगातार क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय होने के साथ-साथ दुर्गा देवी भी पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रहीं। 3 दिसम्बर 1925 को अपने प्रथम व एकमात्र पुत्र के जन्म पर दुर्गा देवी ने उसका नाम प्रसिद्ध क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल के नाम पर शचीन्द्रनाथ वोहरा रखा।

वक्त के साथ दुर्गा देवी क्रान्तिकारियों की लगभग हर गुप्त बैठक का हिस्सा बनती गयीं। इसी दौरान वे तमाम क्रातिकारियों के सम्पर्क में आईं। कभी-कभी जब नौजवान क्रान्तिकारी किसी समस्या का हल नहीं ढूँढ़ पाते थे तो शान्तचित्त होकर उन्हें सुनने वाली दुर्गा देवी कोई नया आईडिया बताती थीं। यही कारण था कि वे क्रान्तिकारियों में बहुत लोकप्रिय और 'दुर्गा भाभी' के नाम से प्रसिद्ध थीं। महिला होने के चलते पुलिस उन पर जल्दी शक नहीं करती थी, सो वे गुप्त सूचनायें एकत्र करने से लेकर गोला-बारूद तथा क्रान्तिकारी साहित्य व पर्चे एक जगह से दूसरी जगह ले जाने हेतु क्रांतिकारियों की काफी सहायता करती थीं। 1927 में लाला लाजपतराय की मौत का बदला लेने के लिये लाहौर में बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता दुर्गा देवी ने ही की। बैठक में अंग्रेज पुलिस अधीक्षक जे.ए. स्कॉट को मारने का जिम्मा वे खुद लेना चाहती थीं, पर संगठन ने उन्हें यह जिम्मेदारी नहीं दी।

8 अप्रैल 1929 को सरदार भगत सिंह ने बटुकेश्वर दत्त के साथ आजादी की गूँज सुनाने के लिए दिल्ली में केन्द्रीय विधान सभा भवन में खाली बेंचों पर बम फेंका और कहा कि -''बधिरों को सुनाने के लिए अत्यधिक कोलाहल करना पड़ता है।'' इस घटना से अंग्रेजी सरकार अन्दर तक हिल गयी और आनन-फानन में 'साण्डर्स हत्याकाण्ड'से भगत सिंह इत्यादि का नाम जोड़कर फांसी की सजा सुना दी। भगत सिंह को फांसी की सजा क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिये बड़ा सदमा थी। अतः क्रान्तिकारियों ने भगत सिंह को छुड़ाने के लिये तमाम प्रयास किये। मई 1930 में इस हेतु सेन्ट्रल जेल लाहौर के पास बहावलपुर मार्ग पर एक घर किराये पर लिया गया, पर इन्हीं प्रयासों के दौरान लाहौर में रावी तट पर 28 मई 1930 को बम का परीक्षण करते समय दुर्गा देवी के पति भगवतीचरण वोहरा आकस्मिक विस्फोट से शहीद हो गये। इस घटना से दुर्गा देवी की जिन्दगी में अंधेरा सा छा गया, पर वे अपने

पति और अन्य क्रान्तिकारियों की शहादत को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहती थीं। अतः, इससे उबरकर वे पुनः क्रान्तिकारी गतिविविधियों में सक्रिय हो गईं।

लाहौर व दिल्ली षडयंत्र मामलों में पुलिस ने पहले से ही दुर्गा देवी के विरुद्ध वारंट जारी कर रखा था। ऐसे में जब क्रांतिकारियों ने बम्बई के गवर्नर मैल्कम हेली को मारने की रणनीति बनायी, तो दुर्गा देवी अग्रिम पंक्ति में रहीं। 9 अक्टूबर 1930 को इस घटनाक्रम में हेली को मारने की रणनीति तो सफल नहीं हुई पर लैमिंगटन रोड पर पुलिस स्टेशन के सामने अंग्रेज सार्जेंट टेलर को दुर्गा देवी ने अवश्य गोली चलाकर घायल कर दिया। क्रान्तिकारी गतिविधियों से पहले से ही परेशान अंग्रेज सरकार ने इस केस में दुर्गा देवी सहित 15 लोगों के नाम वारण्ट जारी कर दिया, जिसमें 12 लोग गिरफ्तार हुये पर दुर्गा देवी, सुखदेव लाल व पृथ्वीसिंह फरार हो गये। अन्ततः अंग्रेजी सरकार ने मुख्य अभियुक्तों के पकड़ में न आने के कारण 4 मई 1931 को यह मुकदमा ही उठा लिया। मुकदमा उठते ही दुर्गा देवी पुनः सक्रिय हो गयीं और शायद अंग्रेजी सरकार को भी इसी का इन्तजार था। अन्ततः 12 सितम्बर 1931 को लाहौर में पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया, पर उस समय तक लाहौर व दिल्ली षड्यंत्र मामले खत्म हो चुके थे और लैमिंगटन रोड केस भी उठाया जा चुका था, अतः कोई ठोस आधार न मिलने पर 15 दिन बाद मजिस्ट्रेट ने उन्हें रिहा करने के आदेश दे दिये। अंग्रेजी सरकार चूँकि दुर्गा देवी की क्रांतिकारी गतिविधियों से वाकिफ थी, अतः उनकी गतिविधियों को निष्क्रिय करने के लिये रिहाई के तत्काल बाद उन्हें 6 माह और पुनः 6 माह हेतु नजरबंद कर दिया। दिसम्बर 1932 में अंग्रेजी सरकार ने पुनः उन्हें 3 साल तक लाहौर नगर की सीमा में नजरबंद रखा।

तीन साल की लम्बी नजरबन्दी के बाद जब दुर्गा देवी रिहा हुयीं तो 1936 में दिल्ली से सटे गाजियाबाद के प्यारेलाल गर्ल्स स्कूल में लगभग एक वर्ष तक अध्यापक की नौकरी की। 1937 में वे जबरदस्त रूप से बीमार पड़ी और दिल्ली की हरिजन बस्ती में स्थित सैनीटोरियम में उन्होंने अपनी बीमारी का इलाज कराया। उस समय तक विभिन्न प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार बन चुकी थी और इसी दौरान 1937 में ही दुर्गादेवी ने भी कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर राजनीति में अपनी सक्रियता पुनः आरम्भ की। अंग्रेज अफसर टेलर को मारने के बाद फरार रहने के दौरान ही उनकी मुलाकात महात्मा गाँधी से हो चुकी थी। 1937 में वे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी दिल्ली की अध्यक्षा चुनी गयीं एवं 1938 में कांग्रेस द्वारा आयोजित हड़ताल में भाग लेने के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। 1938 के अन्त में उन्होंने अपना ठिकाना लखनऊ में बनाया और अपनी कांग्रेस सदस्यता उत्तर प्रदेश स्थानान्तरित कराकर यहाँ सक्रिय हुयीं। सुभाषचन्द्र बोस की अध्यक्षता में आयोजित जनवरी 1939 के त्रिपुरी (मध्यप्रदेश) के कांग्रेस अधिवेशन में दुर्गा देवी ने पूर्वांचल स्थित आजमगढ़ जनपद की प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

दुर्गा देवी का झुकाव राजनीति के साथ-साथ समाज सेवा और अध्यापन की ओर भी था। 1939 में उन्होंने अड्यार, मद्रास में मांटेसरी शिक्षा पद्धति का प्रशिक्षण ग्रहण किया और लखनऊ आकर जुलाई 1940 में शहर के प्रथम मांटेसरी स्कूल की स्थापना की, जो वर्तमान में इंटर कॉलेज के रूप में तब्दील हो चुका है। मांटेसरी स्कूल लखनऊ की प्रबन्ध समिति में तो आचार्य नरेन्द्र देव,

रफी अहमद किदवई व चन्द्र भानु गुप्ता जैसे दिग्गज शामिल रहे। 1940 के बाद दुर्गा देवी ने राजनीति से किनारा कर लिया पर समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को काफी सराहा गया।

दुर्गा देवी ने सदैव से क्रान्तिकारियों के साथ कार्य किया था और उनके पति की दर्दनाक मौत भी एक क्रांतिकारी गतिविधि का ही परिणाम थी। क्रांतिकारियों के तेवरों से परे उनके दुख-दर्द और कठिनाइयों को नजदीक से देखने व महसूस करने वाली दुर्गा देवी ने जीवन के अन्तिम वर्षों में अपने निवास को ‘‘शहीद स्मारक शोध केन्द्र’’ में तब्दील कर दिया। इस केन्द्र में उन शहीदों के चित्र, विवरण व साहित्य मौजूद हैं, जिन्होंने राष्ट्रभक्ति का परिचय देते हुए या तो अपने को कुर्बान कर दिया अथवा राष्ट्रभक्ति के समक्ष अपने हितों को तिलांजलि दे दी। एक तरह से दुर्गा देवी की यह शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि थी तो आगामी पीढ़ियों को आजादी की यादों से जोड़ने का सत्साहस भरा जुनून भी। पारिवारिक गतिविधियों से लेकर क्रान्तिकारी, कांग्रेसी, शिक्षाविद् और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में आजीवन सक्रिय दुर्गा देवी 92 साल की आयु में 14 अक्टूबर 1999 को इस संसार को अलविदा कह गयीं। दुर्गा देवी उन विरले लोगों में से थीं जिन्होंने गाँधी जी के दौर से लेकर क्रान्तिकारी गतिविधियों तक को नजदीक से देखा, पराधीन भारत को स्वाधीन होते देखा, राष्ट्र की प्रगति व विकास को स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के दौर के साथ देखा.........आज दुर्गा देवी हमारे बीच नहीं हैं, पर हमें उनके सपनों, मूल्यों और जज्बातों का अहसास है। आज देश के विभिन्न क्षेत्रों में तमाम महिलाएं अपनी गतिविधियों से नाम कमा रही हैं, पर दुर्गा देवी ने तो उस दौर में अलख जगाया जब महिलाओं की भूमिका प्रायः घर की चहरदीवारियों तक ही सीमित थी।

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास
नदेसर, कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी-221002

ग़ज़ल

हमसफ़र मेरा हाथ थामो अब चला जाता नहीं
ज़िन्दगी की शाम आयी कुछ नज़र आता नहीं।।

चुप हैं दरवाज़े यहां और चुप दरो -दीवार हैं
मुझसे मिलने मेरे घर पे अब कोई आता नहीं।।

तेरी ख़्वाहिश मेरी मेहनत से बना ये आशियां
जो थे रहवासी गये कोई लौटकर आता नहीं।।

थे परिन्दे उड़ गए आकाश हैं अब नापते
दाना चुगने भी मेरे घर अब कोई आता नहीं।।

मैं तुम्हारी आँख हूँऔर तू मेरी बूढ़ी छड़ी
बहते आँसू पोंछने भी अब कोई आता नहीं।।

चल चलें हमदम मेरे मुल्के -अदम की राह पर
चल बुझा दें शम्म ए जां अब कोई आता नहीं।।

महेंद्र अलंकार

शरद की संध्या में कानन मध्य मेरा वह ठहरना!

~

जानता हूँ कौन है अधिपति सहज ही इन वनों का,
मानता हूँ, है वो वासी पास के ही अंचलों का।
है मेरी अवधारणा वह देख पाएगा नहीं,
देखना मय अश्व के, मेरा, प्रकृति के इन पलों का।
जानता हूँ कौन है........

अश्व मेरा सोचता है,दिग्भ्रमित हो, हो अचंभित,
जाने ये ठहराव कैसा!हो न जाएँ हम विलम्बित।
अति हिमीकृत झील का पानी है अरु सुषमा वनों की,
कालिमा से प्रतिध्वनित है, दौर है यह अटकलों का।
जानता हूँ कौन है........

कर रहा पृच्छा सतत वो अपने साज़ और घंटियों से,
हो न जाए भूल कोई नासमझ सी संधियों से।
जाने वातावरण कैसा,सर्द चलती हैं हवाएँ,
बर्फ़ की बस सरसराहट,दौर है क्या यह छलों का।
जानता हूँ कौन है........

कर रही आकृष्ट सुषमा,इन वनों की तीव्रता से,
किन्तु पथ कर्तव्य का मुझको बुलाता शीघ्रता से।
साधना-पथ पर शरद को है अभी बस दूर जाना,
कर्म-पथ पर रत है रहना,त्याग चिन्तन तत्फलों का।
जानता हूँ कौन है........
मानता हूँ...............

डॉ. शरद श्रीवास्तव शरद
काव्यानुवादक

परमहंस तिवारी

साँझ को समेट लो
निशा को अंक में भरो
सुबह का इंतजार तुम
कुछ इस तरह किया करो।

गुलाब के प्रलोभनों को
ग्रहण मत किया करो
सुबह का इंतजार तुम
कुछ इस तरह किया करो।

लिखा तुम्हारे भाग्य में जो
कर्म से बदल दो तुम
सुबह को गति प्रदान कर
नवीन जोश पुंज तुम
यह दिन तुम्हारा ही तो है
शान से जिया करो
सुबह का इंतजार तुम
कुछ इस तरह किया करो।

न शोक कर कि छत नहीं
अबाध चांदनी तो है
दीये में तेल न सही
जुगनू की रोशनी तो है
सारा फ़लक तुम्हारा है
अफ़सोस मत किया करो
सुबह का इंतजार तुम
कुछ इस तरह किया करो।

तुम नदी की धार हो
रुकावटों से मत डरो
पहाड़ देगा छोड़ पथ
संकल्प तो पहले करो
मंतव्य पर न ध्यान दो
गंतव्य पर दिया करो
सुबह का इंतजार तुम
कुछ इस तरह किया करो।

श्रम के पुजारी तुम रहे
कौशल तुम्हारा अस्त्र है
तुम सर्वदा अजेय हो
ये स्वेद बिंदु शस्त्र है
वे कर रहे विनाश पर
निर्माण तुम किया करो
सुबह का इंतजार तुम
कुछ इस तरह किया करो।

तुम्हारे पथ में शूल है
न ख्वाब देख फूल का
बढ़े चलो न छोड़ना
ये रास्ता उसूल का

साँझ को समेट लो
निशा को अंक में भरो
सुबह का इंतजार तुम
कुछ इस तरह किया करो।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

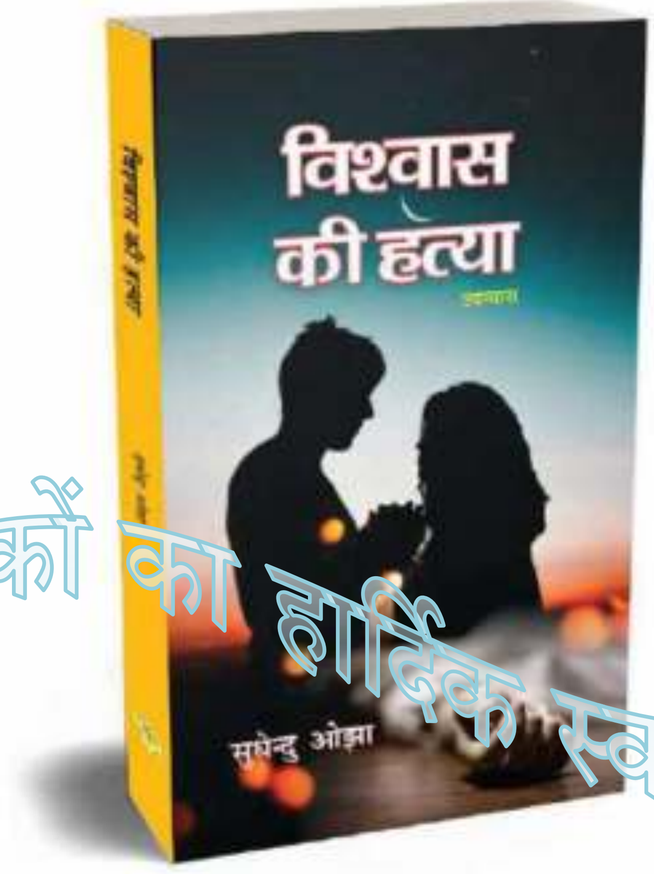

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-8-7**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 198

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

कहानी

बड़े लेखक

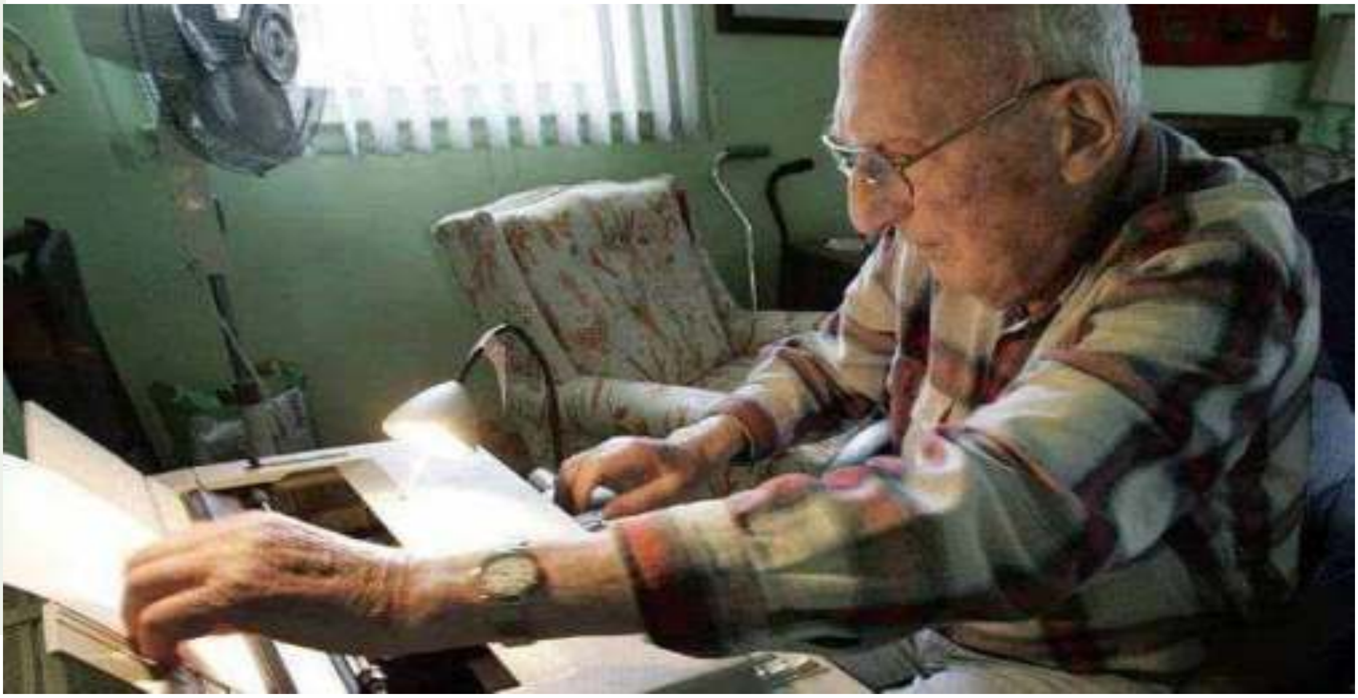

मूल तमिल लेखक
डब्यू गोपालकृष्णन

नोट-तमिल में उब्बासी को खोट्टावी कहते है

''पट्टाभी। कभी भी जी। एम। तुम्हें बुला सकते हैं। तैयार रहा। तेरे बारे में लोगों ने कुछ कुछ कहा है। ऐसा लगता है। ''अपने साथ पढ़े हुए इस समय जी। एम। के सेक्रेटरी कीच्चामी ने उसे चेताया। उसके जाने के बाद एकौउंटस में एक अधिकारी पट्टाभी के पेट में डर के मारे गुडगुडाहट होने लगी।

अभी कुछ समय पहले ही उतर भारत से ट्रान्सफर होकर यहां दक्षिण भारत आए।ऐसा सुनने में आया कि नए जी। एम। बहुत ही स्ट्रिक्ट। किसी बात में न झुकने वाले स्ट्रेट फॉर्वड। आदमी हैं। वह अपने कार्य के प्रति बहुत ही सर्तक हैं। ऐसी सभी बातें उनके बारे में होती हैं।

पट्टाभी ने भीकोई बड़ी गलति की नहीं। इस एक ही महिने में अलग अलग चार पत्रिकाओं में उसकी कहानियां 'खोटावी ' उप नाम से छपी है। वे जिस बड़ी कम्पनी में काम करते हैं वहां आजकल इसके बारे में ही चर्चा है।बहुत से लोग पट्टाभी की कल्पना शक्ति। कहानी में जो उत्सुकता है व उसने जो समस्या उठाई है उसकी तारीफ करते हैं।पर कुछ लोगों कोउन पर गुस्सा करते हैं। उसे ईर्ष्या भी कह सकते हैं। आफिस में हमी ऐसे हैं जो वेतन उठाते उसका पूरे विश्वास के साथ काम करते हैं। यें पट्टाभी कहानी लिखता हूं कहकर कहानी बनाता फिरता है। वे लोग उससे खार खए बैठे थे।शायद उनमें से ही किसी ने जी। एम। कुछ कह दिया हो ? इसी बात को सोच पट्टाभी डर रहा था।

इतने में ही ''जी। एम। आपको बुला रहे हैं।'' बुलावा आ गया। पट्टाभी ने जल्दी से बाथरूम में जाकर हल्का होकर चेहरे को पानी से धोया।फिर शर्ट की जेब से एक छाटी सी पुड़िया निकाल कर उसे खोल उसमें से भभूति निकाल कर माथे पर थोड़ा लगाया।मन ही मन सब भगवानों से प्रार्थना की फिर जी। एम। के कमरे में धीरे से बिल्ली जैसे घुसा।

जी। एम। सहाब किसी फाइल को देखने में मग्न थे। जब थोड़ा सिर उठा कर उन्होंने देखा। तो पट्टभी ने दोनों हाथ जोड़कर 'नमस्कार सर' बोला।

''आईए--आप ही पट्टाभी हो क्या ? बैठिये।

''जी। एम। बोले।

''थैंक्स सर ''कह कर सामने बड़े कुषन वाले कुर्सी के किनारे पर ही पट्टाभी बैठे।

''आप कुछ कहानियां आदि लिखते हो सभी कह रहें हैं। मुझे उसके बारे में आपसे पूछना था। व आपको आपके ट्रान्सफर के बारे में भी बताना था।''

''सर। । । । । । सर । । । । । प्लीज । । । । । । ऐसा कुछ जल्दबाजी में मत कर दीजियेगा ! मैं बाल बच्चे वाला हूं। मेरे बुर्जुग मां-बाप है। मैं उनका इकलौता बेटा हूं।मुझे व मेरी पत्नी को शुगर व ब्लड़ प्रेशर की बीमारी है सर। मेरे तीन बच्चे अठवीं। छठी व चैथी में पढ़ते हैं। अतः अपने ही शहर में नौकरी करने से ही किसी तरह लाइफ चल रही है। हमारा सयुंक्त परिवार है। इस चिड़िया के घोंसले को दया करके मत हटाइये। आपको पुण्य मिलेगा। मैं आप कहो तो अब से इस क्षण से कहानी लिखना छोड़

देता हूं। कृपा करके इस बार मुझे क्षमा कर दीजिएगा। ‘‘ आंखों में आंसू लिए पट्टाभी ने बड़ी दयनीय ढ़ग से निवेदन किया।

‘‘नो। । । । नो। । । । । मिस्टर पट्टाभी। आप इस ट्रान्सफर से बच नहीं सकते। मैं एक फैसला लेता हूं। तो उसे पूरा करता ही हूं।’’ जी। एम। के कहते समय ही उसे समर्थन कर रहा हो ऐसे टेलिफोन की घण्टी बजी।

’’ एस्सा। । । । कनेक्ट दी काल ’’ कह कर किसी से बहुत देर तक बातें करते हंसते हुए आज्ञा देते रहें। पट्टाभी का मन घबराहट के मारे धकधक कर रहा था व उसका ब्लड प्रेशर बढ़ रहा था। पता नहीं कौन सी जगह उस भाषा से अन्जान शहर होगा ?क्या पता बिना पानी के जंगल जैसे जगह होगी! सोच सोच वह बड़ा दुखी हो रहा था। उस ए। सी। कमरे के ठण्ड्क में भी उसे पसीना आ रहा था। टेलिफोन से बातें खतम होते ही जी। एम। इनकी ओर देखते हुए बोले ’’डरो मत पट्टाभी। पत्रिकाओं से आप कई सालों से जुड़े हुए हो अतःआपको प्रमोशन देकर आपको अपने विज्ञापन के सेक्शन में मेनेजर बना कर भेज रहा हूं।अभी आप काम कर रहे एकाउट सेक्शन से व्यापार के विज्ञापन विभाग में ये लोकल ट्रान्सफर ही है। वह भी मेनेजर के प्रमोशन के साथ। आपको एडवास में बधाई देता हूं। बधाई दी वे। आपकी अभी तक लिखी कहानियों का एक सेट मुझे चाहिए। बहुत दिनों से दिल्ली में ही रहने से तमिल कहानियों को पढ़ने का मौका ही नहीं मिला। मुझे व मेरी पत्नी को तमिल कहानियां पढ़ने का बहुत शौक है। आप हमेंशा निरंतर तमिल की पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां लिखते रहियेगा। पट्टाभी। । । । । सॉरी। खोट्टावी कह कर इतने बड़े। एक प्रसिद्ध लेखक हमारी कंपनी में काम करते हैं। ये बात तो अपनी कंपनी के लिए गर्व की बात है। ‘‘ ऐसी उसकी प्रशंसा कर खड़े हुए जी। एम। अपने दोनों हाथों से उनके दोनों को लेकर मिलाया व ’आल दी बेस्ट’ कह कर बिदा किया।

उन्हें थैक्स कह कर पट्टाभी बाहर आया व सोचा नये जी। एम। कितने अच्छे है बाद में ही समझ पाया।

अनुवाद-एस भाग्यम शर्मा

भुल्ले

गाँव में अब भुल्ले नहीं दिखते
पहले चिलचिलाती धूप में
जब तेज पछुआ हवा चलती
तब रात में दिखते थे भुल्ले!
लोग उन्हें मरकाठी या मुरकट्टा राकस भी कहते
अकेले आदमी को पटक कर मार देते थे वे,
एक बार बचपन में
अपनी ओर लपकते भुल्लों से भाग कर
मेरी जान बचायी थी चाचाा ने।
मारते -लड़ते लाठी झरनी हो गयी चचा की
मगर खेत से भाग कर हम गाँव घुस ही गए।
जाहिर था कि किसी अज्ञात भय से
जल्दी गाँव नहीं आते थे भुल्ले।
दादी कहती थी कि एकाध बार आए,
तो टीक कट गयी भुल्ले की,
इसलिए उनका डर
गाँव के बाहरी सीमान तक महदूद था
उनसे बचने का आसान तरीका होता
अगर भुल्ले पीछा करें
तो लोग भाग कर गाँव आ जाते।
लेकिन अब?
अब यकायक कहाँ गायब हो गए सारे भुल्ले?
दबी आवाज में
फुसफुसा कर कहते हैं चचा-
बेटे, बहुत दिनों के बाद आए हो
वह सब मत पूछो, अपनी कहो,
अब अलग से कहाँ से दिखेंगे भुल्ले
सब आदमी मे जनम गए।

संजय कुमार सिंह

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)

Author प्रतिमा 'पुष्प'

ISBN : : 978-81-963524-2-4

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 134

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

कहानी: रेणु गुप्ता

एक बार फिर

पाणिनी संगीतश्री का प्रतिष्ठित पुरस्कार राज्य के मुख्यमंत्री के हाथों से ले मुदित मन मंच से नीचे आकर अपने स्थान पर बैठ गई। उसकी नज़रें आरोह की उसके पोर पोर को सहलाती सराहती नज़रों से मिलीं और वह मुस्कुरा दी। पूरा सभागार निरंतर बजती तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। आज उसे लग रहा था मानो उसकी ज़िन्दगी का मकसद पूरा हो गया था।

आज वह ज़िंदगी के उस मुकाम पर आ पहुंची थी। जिसकी उसे एक मुद्दत से तलाश थी। मन में उमड़ते-घूमड़ते विचारों ने कब पुरानी स्मृतियों की सांकल पर थाप दे दी। उसे भान न हुआ। सामने मंच पर कार्यक्रम बदस्तूर चल रहा था। परंतु उसके ज़ेहन में तो बीते वक़्त का एक एक लम्हा मानो सिनेमाई रील की भांति ठहरता। ठिठकता गुज़र रहा था।

वह अपने माँ और पिता की नाजों से पली लाड़ली दुलारी थी। मुंह से कोई बात निकलती नहीं। कि वह आनन-फ़ानन में पूरी हो जाती। अध्ययन में कुशाग्र बुद्धि। वह हर कक्षा में प्रथम आती। लेकिन संगीत उसका पहला प्यार था।

माता पिता ने बचपन से संगीत के प्रति उसका रुझान देखते हुए उसकी संगीत शिक्षा की समुचित व्यवस्था की थी। परिणामस्वरुप बीस वर्ष की अल्पायु में ही उसने गायन में अनेक परीक्षाएं उत्तीर्ण कर पी। एचडी। शुरु कर दी थी। उसके कण्ठ में माँ सरस्वती का साक्षात वास था। शहर में कोई भी सांस्कृतिक कार्यक्रम होता। गणेश वन्दना के लिए उसे ही याद किया जाता। अलग-अलग रागों में सुमधुर गणेश वन्दना गाने में उसे महारथ हासिल थी। जब वह गाती उसके मुंह से मानो फूल झरते।

पच्चीस वर्ष की होते-होते वह आकाशवाणी और दूरदर्शन पर न जाने कितने कार्यक्रम दे चुकी थी।

तभी एक सांस्कृतिक आयोजन में राज्य के एक मंत्री पुत्र पलाश की नज़र उस पर पड़ी। पलाश मंत्री पिता और आई। ए। एस। माँ की इकलौती बिगड़ी हुई संतान थी। अभी तक उसकी माँ उसे न जाने कितनी लड़कियां दिखा चुकी थी। लेकिन उसे कोई भी लडक़ी पसंद नहीं आई थी। पर सभागार में अग्रपंक्ति में बैठे पलाश ने जैसे ही पाणिनी को मात्र एक नज़र भर देखा। उसे लगा उसकी तलाश पूरी हुई। दिल से आवाज आई। 'यही है वह जिसके साथ उसे ज़िंदगी बितानी है।'

पलाश के माता-पिता को भी छुई-मुई। कली सी नाज़ुक। तन्वंगी पाणिनी बेहद पसंद आई। देव प्रतिमा सी अप्रितम सौंदर्य की धनी। सुसंस्कारी। गुणी पाणिनी का किसी को नापसंद आने का कोई सवाल ही नहीं था।

मंत्री परिवार जैसे नामचीन और रईस खानदान का रिश्ता पाकर पाणिनी के माता-पिता फूले न समाए। पाणिनी के माता-पिता दोनों ही बेहद सज्जन व सीधे थे। दोनों ही व्यवहारिकता और दुनियादारी में निहायत ही कोरे थे। एक उच्च शिक्षित। स्वतंत्र व्यक्तित्व की धनी। संवेदनशील। स्वनिर्णायक। अपनी स्वतंत्र अस्मिता रखने

वाली युवती को स्वयं का पूरक सिद्ध होने वाला समझदार। संवेदनशील जीवनसाथी ही खुश रख सकता है। पाणिनी के माता पिता को इसका लेश मात्र भी एहसास न हुआ था। दोनों ही नहीं समझ पाए थे कि पिता का मंत्री पद। अपार धन-दौलत। सुख-सुविधाएं। आलीशान महलनुमा घर होते हुए भी पलाश उच्च शिक्षित। बहुमुखी प्रतिमा की धनी पाणिनी के लिए सर्वथा अयोग्य। अनुपयुक्त वर था। नाम के अनुरुप गुणों की सुगंध से रिक्त पत्थर था। पाणिनी जैसे पारस की तुलना में।

वह बी। ए। पास था और पिता की दो फैक्ट्रियां संभालता था। स्वभाव से वह अति स्वच्छंद। रौबीला और संकुचित मानसिकता का युवक था। लेकिन बाहरी तौर पर वह एक आकर्षक शख़्सियत का स्वामी था। बोल चाल से सभ्य और सुसंस्कृत होने का आभास देता था।

सो मंत्री पिता और प्रशासकीय अफ़सर माँ के रसूख़दार ओहदों से जुड़े सुख-संपदा। ठाठ बाट और ऐश्वर्य की चकाचौंध में वे सही गलत में भेद नहीं कर पाए। और बिना कुछ अधिक चिंतन मनन किए उन्होंने मंत्री परिवार के बेटे के रिश्ते के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। पाणिनी ने भी बिना कुछ अधिक सोचे इस रिश्ते के लिए हामी भर दी।

नियत वक़्त पर उन्होंने अपनी ज़िंदगी भर की पूंजी लगा कर बिटिया को बहुत धूमधाम से पलाश के घर की कुलवधु बना कर उसे विदा कर दिया।

विवाह के बाद पहला वर्ष तो नए विवाह की ख़ुमारी में बीत गया था। शुरु में सब कुछ बहुत अच्छा चला। लेकिन वक़्त के साथ पाणिनी के जिस रुप और कण्ठ पर रीझ कर पलाश ने उसे वरा था। उसका सुरूर धीरे-धीरे उतरने लगा। और कड़वी वास्तविकता सामने आने लगी। पाणिनी को एहसास होने लगा कि यह विवाह उसके लिए सुख और खुशियों का पर्याय सिद्ध नहीं होने वाला।

पलाश एक बहुत ही संकीर्ण मनोवृति का स्वार्थी स्वभाव का अहंकारी युवक था। उसके लिए दुनिया स्वयं से शुरू होकर स्वयं पर ही खत्म हो जाती थी। उसकी स्वकेन्द्रित दुनिया

में किसी अन्य के लिए कोई जगह नहीं थी। पाणिनी जब भी रेडियो स्टेशन या दूरदर्शन पर गाती। घर लौट कर पलाश का मिज़ाज बिगड़ा हुआ पाती। रेडियो स्टेशन या दूरदर्शन पर गाकर आने के बाद वह उससे सीधे मुंह बात न करता। उसे बात बात पर ऐसे दुतकारता। मानो वह कोई गलत काम करके आई हो। प्रत्यक्ष इस विषय पर वह उससे कुछ भी नहीं कहता। लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से वह उसे यह जताये बिना नहीं चूकता। कि अब वह एक प्रतिष्ठित धनाढ्य घराने की बहू है। और रेडियो स्टेशन और दूरदर्शन पर गाना गाने जाना उसे शोभा नहीं देता। यह उनके उच्च आभिजात्य कुल की गरिमा के विरुद्ध है।

गाहे-ब-गाहे जब किसी रिश्तेदार या परिचित के घर आने पर उनके अनुरोध पर वह गाती। तो उस दिन भी उसका मूड बिगड़ जाता।

उसने अपने रवैये से धीरे-धीरे पाणिनी को यह जता दिया कि उसे उसका गाना सर्वथा नापसंद है। हां। वह स्वयं रोजाना ही रात को सोने से पहले उससे एक अच्छी सी गज़ल ज़रूर सुनता। और फिर उसकी गायकी की दिल खोल कर तारीफ़ करता। वह चाहता कि पाणिनी सिर्फ उसके लिए गाये। सिर्फ उससे बात करे और उसके लिए पहने ओढ़े। यहां तक कि उसे पाणिनी का किसी अन्य पुरुष मित्र या रिश्तेदार से हँसना बोलना तक पसंद नहीं था।

पाणिनी यह देख तिल-तिल मरती। रह-रहकर पछताती कि महज ऊंचे परिवार से रिश्ता जोड़ने के प्रलोभन में आकर उसने एक ऐसे लडक़े से रिश्ता जोड़ लिया। जिसकी सोच कतई स्वस्थ्य नहीं थी। उसे पति की यह मानसिकता रुग्ण और बीमार लगा करती।

वह समझ नहीं पा रही थी कि परिस्थितियों के इस नाज़ुक मोड़ पर उनसे कैसे सफलतापूर्वक निबटा जाए?

उस दिन रविवार था। पाणिनी की घनिष्ठ सहेली गूँज अपने पति के साथ उसके यहां दोपहर के खाने पर आई हुई थी।

बातों ही बातों में गूँज के पति ने उससे एक गज़ल सुनाने की फ़रमाइश की। जिसे सुनकर पाणिनी सहम गई। उधर गूँज और

उसके पति दोनों ही गज़ल गाने के लिये उससे इसरार कर रहे थे। उन दोनों को उससे गाने का इसरार करते हुए देख पलाश का क्रोध पल पल बढ़ता जा रहा था। और क्रोधावेश से उसकी मुखमुद्रा तन गई थी। उस के शांत किन्तु क्रोधित चेहरे को देखकर पाणिनी मन ही मन डर रही थी। और उसने गाने के लिए मना कर दिया। लेकिन न जाने क्यों गूँज उससे गाने के लिए ज़िद्द पर उतर आई। सो विवश पाणिनी को गाना पड़ा।

उधर पाणिनी को गाता देख पलाश का मूड खराब हो गया और वह वहां से उठ कर बाहर चला गया।

यह सब देख पाणिनी बुरी तरह से डर गई। सहेली का भयभीत। उतरा हुआ चेहरा देख गूँज बिना कुछ पूछे बहुत कुछ समझ गई। पीयूष के बाहर जाने से वातावरण अत्यन्त असहज और तनावपूर्ण हो गया था। पाणिनी ने गुप-चुप सहमते हुए बहुत मानमनौवल कर पति को वापिस खाने की टेबल पर बुलाया। और जल्दी-जल्दी खाना पीना निपटाया।

उस दिन घर जाकर गूँज ने पाणिनी को फोन किया। और उससे उसकी परेशानी का कारण पूछा। पाणिनी ने गूँज को उसके गाने को लेकर पलाश की संकुचित मानसिकता के बारे में बताया। उसके बाद गूँज और पाणिनी कई बार अकेले में मिले। और पाणिनी ने गूँज को अपनी पूरी समस्या विस्तार से बताई।

इस मुद्दे पर गंभीर चर्चा के बाद दोनों ही इस निर्णय पर पहुंचे कि इस विवाह को बचाने की खातिर अपनी गायकी का अंत करना निरी मूर्खता होगा। पीयूष जैसी संकुचित मनोवृति वाले पति के साथ हंसी-खुशी सामान्य जीवन बिताना कदम-कदम पर मुश्किल होगा। साथ ही यहां तो उसकी गायकी भी दांव पर लगी हुई थी। इसलिये इस विवाह से मुक्त होना ही उसके लिए ठीक रहेगा।

पर आज के समय में भी विवाह के बंधन से स्वतंत्र होना उतना आसान नहीं है। वह माँ पिता को क्या कहकर अपने इस निर्णय से अवगत कराएगी। यदि वह यह निर्णय ले लेती है तो वह उसके माता-पिता के दु:ख का बहुत बड़ा कारण बन जाएगा। उन्हें वह क्या कहकर तलाक़ के लिए अपनी स्वीकृति देने के लिए आश्वस्त करेगी।

ये कई सारे प्रश्न थे जो इस समय उसके अन्तर्मन को मथ रहे थे।

बहुत सोच समझ कर वह कुछ दिनों के लिए अपने मायके आ गई। और एक दिन साहस बटोरकर उसने अपने विवाहित जीवन की परेशानियों का पिटारा माता-पिता के सामने खोल दिया।

उसकी परेशानियों के बारे में सुनकर माता-पिता को गहरा सदमा पहुंचा। वे उसकी इस बात से सहमत थे कि बिना पलाश के सक्रिय सहयोग के वह गायकी के क्षेत्र में बिल्कुल आगे नहीं बढ़ सकती। पाणिनी की गायकी पर पति की पाबंदिया बहुत चिंताजनक थीं। अभी उसके सामने उसकी पूरी जिन्दगी पड़ी थी। उसे गायकी में एक मुक़ाम हासिल करना था। और गायन के प्रति पलाश के असंवेदनात्मक रवैये को देखते हुए यह बिल्कुल नामुमकिन था।

शायद आपसी बातचीत से इस समस्या का कोई हल निकल जाए। -यह सोचकर पाणिनी के माता-पिता ने इस मुद्दे पर बातचीत के लिए पलाश और उसके माता-पिता को एक दिन दोपहर के भोजन पर उन्हें अपने घर आमंत्रित किया।

इस बातचीत से भी समस्या का कोई हल नहीं निकला। पलाश ने साफ लफ़्ज़ों में कह दिया- ‘‘मुझे पाणिनी का घर के बाहर गाना सख्त नापसंद है। अगर उसे मेरे साथ रहना है तो मेरी यह बात माननी ही पड़ेगी।’’

पाणिनी के माता-पिता ने दामाद को लाख समझाने की कोशिश की। कि गायन उसकी ज़िंदगी है। गायन के बिना उसकी ज़िंदगी में कुछ भी नहीं बचेगा। लेकिन फिर भी पलाश पर उनकी बातों का कोई असर नहीं हुआ और वह अपने निर्णय से टस से मस नहीं हुआ।

ज़िंदगी के इस मोड़ पर पाणिनी को एहसास हो रहा था कि पलाश से बिना अधिक सोचे समझे विवाह कर उसने सबसे बड़ी भूल की।

तभी उन्ही दिनों उसे एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय स्तर के अखिल भारतीय गायन समारोह में

भाग लेने का निमंत्रण मिला। जिसमें भाग लेने के लिए उसने अपने आप पलाश की सहमति लिए बिना अपनी सहमति भेज दी। मायके में आकर उसे ऐसा लगा। मानो वह एक बार फिर खुली हवा में आ गई थी। इतने दिन ससुराल में बिना गायकी के वह घुट-घुट कर रह रही थी। लेकिन एक बार फिर से संगीत का रियाज़ कर उसे लगा कि उसके निराशा भरे जीवन में आशा का दीप जल उठा था। इस स्थिति में ज़िंदगी जीने की कोई वज़ह बची थी तो वह थी उसकी मौसिकी।

उसने शिद्दत से अपने आपको गायन में झौंक दिया। गायन ही उसकी ज़िंदगी का एकमात्र मकसद बन गया था अब।

समारोह में अपनी प्रस्तुति का रोज़ाना सुबह चार बजे उठ कर नियमित रियाज़ करती।

अंततः उसकी कड़ी मेहनत रंग लाई। उस समारोह में उसे अभूतपूर्व सफलता मिली। उसके गायन को एक नई पहचान मिली। उसके शहर के समाचार-पत्रों में उसकी दक्ष गायकी के परचम लहरा उठे। पन्ने के पन्ने उसकी गायकी की प्रशंसा में रंगे पड़े थे। उसे अनेक दिग्गज कलाकारों की अपूर्व प्रशंसा मिली।

इस सफलता से उत्साहित हो अब पाणिनी ने ठान लिया वह वापिस पलाश के घर नहीं जाएगी। जहां किसी को भी उसकी भावनाओं। खुशियों। उसकी संतुष्टि की रत्ती भर भी परवाह नहीं थी। गायकी ने उसे अपूर्व नाम यश दिलवाया था। उसने मन ही मन ठान लिया। अब वह गायकी को अपनी ज़िंदगी में वह स्थान देगी। जो पहले उसने उसे कभी भी नहीं दिया था।

यह सोचकर पाणिनी नई ऊर्जा औैर उत्साह से भर उठी। उन्हीं दिनों जब उसने मौसिकी को अपनी ज़िंदगी की पहली प्राथमिकता बनाने का निर्णय लिया। उसके मन आंगन में आरोह का पदार्पण हुआ।

आरोह स्वयं भी एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ और संगीत समालोचक था।

संगीत समारोह लगभग एक माह चला। और उस समारोह में पाणिनी और आरोह दोनों साथ-साथ रहे थे। आरोह का स्वभाव अत्यंत शांत। सरल। सहज और सीधा सादा था।

उसका व्यक्तित्व अत्यन्त मृदु। था और उससे बातें करना पाणिनी को बहुत अच्छा लगता था। समारोह में हर प्रस्तुति के बाद आरोह उसके गायन की प्रशंसा करता और उसका उत्साह बढ़ाता। कदम-कदम पर वह उसकी गायकी का विश्लेषण कर उसमें सुधार लाने के लिए उसे उत्साहित करता। वक्त के साथ उन दोनों की दोस्ती का रंग गहराता जा रहा था।

दोनों एक दूसरे से अपने मन की बात साझा करने लगे।

धीरे-धीरे वक्त के साथ वह उसका विश्वासपात्र बन गया। जिस पर पाणिनी आंख मूंद कर भरोसा कर सकती थी।

इधर कुछ दिनों से आरोह को लेकर वह कुछ असहज महसूस करने लगी थी। अक्सर वह उसकी दृष्टि को अपने चेहरे पर निबद्ध पाती। मानो उससे कुछ पूछने का प्रयास कर रही थी। पाणिनी जब से पलाश से अलग हुई थी। उसने अपने आपको मात्र गायकी के सीमित दायरे में बांध लिया था। उसके लिए प्रेम। प्यार जैसी कोमल भावनाएं बेअर्थ। बेमानी हो गई थीं। जिन पर अब उसे विश्वास न रहा था। लेकिन आरोह की आंखें मानो उसे मूक आमंत्रण देती नज़र आतीं। दोस्ती से कुछ अधिक। जिन्हें भांप कर वह परेशान हो जाती।

एक दिन बातों ही बातों में आरोह ने उसे बताया। "मेरा विवाह बचपन में ही मेरे माता-पिता ने कर दिया था। लेकिन शादी के एक वर्ष बाद ही उसकी कैंसर से मृत्यु हो गई। अब मैं बिलकुल तुम्हारी जैसी शांत। अच्छे स्वभाव की लडक़ी ढूंढ़ रहा हूं जो ज़िंदगी के सफ़र में मेरी पूरक बन सही अर्थों में मेरी हमराह और सबसे पहले मेरी सबसे अच्छी दोस्त बन सके। हम दोनों मित्र तो बहुत अच्छे बन चुके है। अगर मैं तुमसे दोस्ती से कुछ अधिक माँगू तो क्या तुम मुझे दोगी?"

पाणिनी की समझ में नहीं आ रहा था कि परिस्थितियों के इस मोड़ पर वह आरोह से क्या बोले? वह अभी भी अपने आपको पलाश की विवाहिता मानती थी। और आरोह के इस कथन ने उसे किंकर्तव्यविमूढ़

अस्मिता की क़द्र करता था और सर्वोपरि उसकी संगीत प्रतिभा की क़द्र करता था।

यह महसूस कर उसने निर्णय लिया कि वह आरोह के रूप में आई नई ज़िंदगी को दूसरा मौका अवश्य देगी। हां इस बार वह जो भी फ़ैसला लेगी। बहुत सोच समझकर। आरोह के बारे में यह निर्णायक फ़ैसला ले उसे बेहद सुकून का अनुभव हुआ।

अगले दिन आरोह से सामना होने पर उसने उससे बिना लाग लपेट के कहा-''आरोह आप एक बहुत अच्छे भले इंसान है। आपकी दोस्ती मेरे लिए बहुत मायने रखती है। आपकी मित्रता पर मुझे बहुत फ़ख्र है। लेकिन आपको हमारी इस दोस्ती का वास्ता। अभी फिलहाल मैं इस विषय पर आगे कोई बात नहीं करना चाहती। मेरा यकीन करिये। सही समय आने पर मेरे माता-पिता आपसे बात ज़रूर करेंगे।''

पाणिनी की यह अप्रत्यक्ष हां सुनकर आरोह का चेहरा खुशी से खिल उठा था।

उस ने आरोह को अपने माता-पिता से मिलवाया।

एक दिन आरोह ने उसके माता-पिता से उसका हाथ माँगा।

आरोह की ओर से विवाह का औपचारिक प्रस्ताव आने के बाद उसके माता-पिता ने पलाश को तलाक़ का नोटिस भिजवा दिया। एक वर्ष बाद दोनों पक्षों की सहमति से पलाश और पाणिनी के मध्य तलाक़ हो गया।

तलाक़ के बाद जब पाणिनी के माता-पिता ने आरोह से उन दोनों के विवाह की बात की। यह बात बहुत जोर देकर कही। 'आरोह आपके संपर्क में आए हुए हमें बहुत समय हो गया। प्रारब्ध से बस एक ही शिकायत है। विधाता ने आपको पाणिनी के जीवन में पहले क्यों नहीं भेजा। खैर। बस एक बात के बारे में आश्वस्त होना है। आपको उसकी गायकी पर तो कोई ऐतराज नहीं है ना? वह अपनी गायकी नहीं छोड़ सकती। किसी भी कीमत पर। मौसिकी उसे जान से भी प्यारी है। उसने अपना पूरा जीवन गायकी को देने का निश्चय किया है। आपको उससे कोई आपत्ति नहीं है न?'

''कैसी बातें करते हैं पापा। गायकी ही तो वह सूत्र है। जिसने मुझे और पाणिनी को एक अटूट बंधन में बांधा है। मैं तो उसे शीर्ष पर देखना चाहता हूं। पाणिनी गायकी को समय देगी। घंटो रियाज़ करेगी तभी तो इस क्षेत्र में नाम कमाएगी। इस विषय में आप बिल्कुल चिंतामुक्त हो जाएं। आप सबके आशीर्वाद से देखिएगा। वह संगीत में बहुत आगे जाएगी।''

यह सुनकर वह स्वयं और उसके माता-पिता बहुत हद तक निश्चिंत हो गए।

नियत वक्त पर दोनों का विवाह हो गया।

पिछले दस वर्षों से वह और आरोह दोनों सुखी विवाहित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आरोह के बेशर्त सहयोग और प्रोत्साहन से उसका नाम आज देश के शीर्षस्थ प्रतिष्ठित गायकों में शुमार हो गया है। और अब तो उसे फिल्मों में भी गायकी के अवसर मिलने लगे हैं।

वह फिर से एक बार नेह। प्यार। समर्पण की जादुई ताकत में यकीन करने लगी है। जिसमें उसका भरोसा खत्म हो गया था।

पिछले दो ढाई घंटे सभागार में बैठे बैठे वह गुज़रे जमाने का एक एक पल दोबारा जीती रही थी। तभी आरोह ने उससे कहा। "कहाँ खोई हुई हो भई? अब उठो भी। कार्यक्रम खत्म हो गया। घर चलना है कि नहीं?"

वह चौंक कर वर्तमान में वापस आई। और अनायास पति से कह उठी। "आरोह! यह उपलब्धि तुम्हें समर्पित है। अगर तुम सही समय पर मेरी ज़िंदगी में न आते तो यह मुमकिन न होता।"

जवाब में आरोह उसकी आँखों में झाँकते हुए मुस्कुरा दिया।

उसे लगा। पूरी कायनात मुस्कुरा उठी थी।

~

कर दिया।

उसे लग रहा था कि आरोह ने उसके प्रति अपनी चाहत का इज़हार कर कोई बहुत बड़ा अपराध कर दिया था। इसलिये वह क्षण भर को उसके ऊपर अत्यधिक क्रोधित हो उठी। और क्रोध के अतिरेक से उसकी आंखें छलछला आईं। और वह वहां से उठकर चली गई।

उस दिन सार दिन वह आरोह के बारे में सोचती रही। चाह कर भी वह उसके स्वभाव में कोई कमी नहीं निकाल पाई। बार-बार वह मात्र यह सोचती काश। । । वह उसके जीवन में पलाश के आने से पहले आ गया होता। तो परिस्थितियां इतनी पेचीदा न हुई होतीं।

पलाश से अलग होकर उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था। कि वह अकेले ही संगीत साधना में अपनी ज़िंदगी बिता देगी। उसके रुक्ष। स्वार्थी। अहंवादी स्वभाव का अनुभव कर प्यार। भरोसा। समर्पण जैसी कोमल संवेदनाओं से उसका विश्वास उठ गया था।

पलाश उसका पहला प्यार था। उसने उसे शिद्दत से चाहा था। लेकिन उसने उसकी संवेदनाओं। भावनाओं की कतई क़द्र नहीं की। उसके संपूर्ण समर्पण के प्रतिदान में उसने उसे दी तो मात्र उपेक्षा। अवहेलना। आलोचना। प्रताडऩा और अर्थहीन बंधन और शक की सौगात।

आरोह को वह अभी तक जितना समझ पाई थी। वह एक भला इंसान था। पलाश के विपरीत वह उसकी क़द्र करता था। उसकी

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

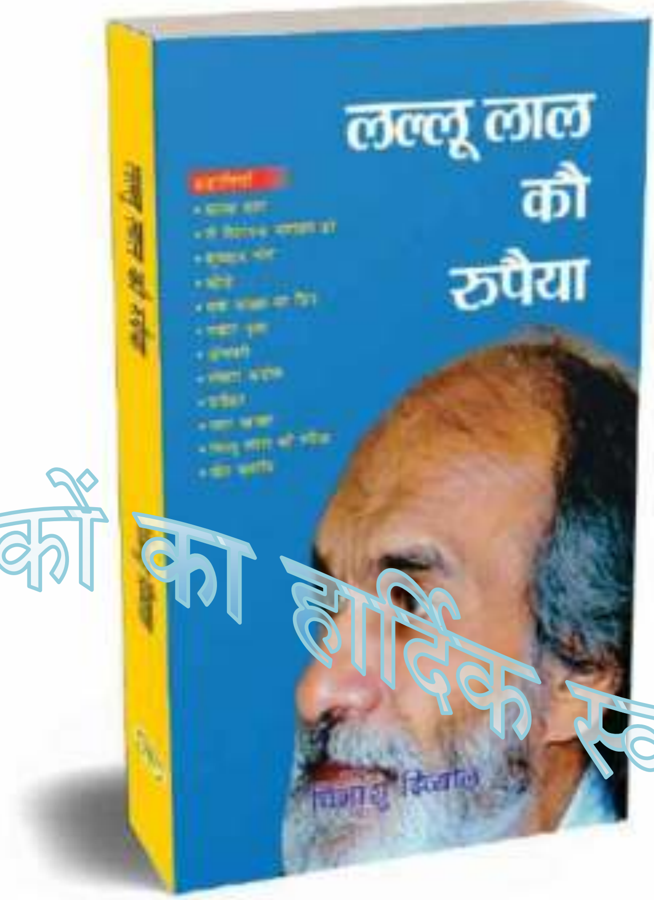

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)

Author विभांशु दिव्याल

ISBN : : 978-81-964179-3-2

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 190

Price : 350/-

Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

गीत

==================

आंखों में जिसके भी देखो दिखते हैं दुख के अवशेष ।
जीवन भर हम उत्तर देते प्रश्न सदा कुछ रहते शेष ॥

भौतिकता के छद्म सफर में बनता किसका कौन सहारा ,
टूट रहा विश्वास सभी का मृगतृष्णा सा जीवन सारा ,
फिर उपहास उड़ाते खल क्यों ऋषि मुनि के सच्चे उपदेश।
जीवन भर हम उत्तर देते प्रश्न सदा कुछ रहते शेष ॥...1

न्यायरथी साहब कहलाते वो भी करते हैं समझौता,
जैसे दिनकर का हमराही तम के घर में जाकर बैठा ,
लादे सुख साधन की गठरी जीते दुखियों सा परिवेश।
जीवन भर हम उत्तर देते प्रश्न सदा कुछ रहते शेष ॥....2

जीवन की आपाधापी में कौन किसी का अब होता है ,
सपनों में जो हरदम जीता पाता कम ज्यादा खोता है ,
जीवन भी सतरंगी चूनर ओढ़ सुनाती नव संदेश ।
जीवन भर हम उत्तर देते प्रश्न सदा कुछ रहते शेष ॥...3

अपने मन की राहें चुनते नयन भिगोते फिर क्यों छुपकर ,
साथ नहीं है तेरे कोई देख रहे हो किसको मुड़कर ,
कंटक को पुष्प समझने की जो भूल अभी है दंड शेष।
जीवन भर हम उत्तर देते प्रश्न सदा कुछ रहते शेष ॥....4

रचना खुद रचती है कवि को

कवि का भ्रम है वह रचता है,
निज भावों की अभिव्यक्ति को।
रचना खुद रचती है कवि को।।

कई बार लगता है ऐसा,
कलम ही यह अवरुद्ध हो गई।
बहुत चाहता हूँ लिखना पर,
कविता जैसे क्रुद्ध हो गई।।
कभी बढ़ा देती है आकर,
स्वतः लेखनी के फिर गति को।
रचना खुद रचती है कवि को।।

बस प्रयास से जो लिखते है,
तुकबन्दी है शब्द ज्ञान है।
मन तक बात कहाँ जाती है
भले सही सारे विधान है।।
स्वयम अवतरित होती है जो,
वही निखारे सदा छवि को।
रचना खुद रचती है कवि को।।

अगर बसे साहित्य किसी मे,
होना फिर सम्मान है अच्छा।
मगर स्वयं उसको हो जाना,
नही कभी अभिमान है अच्छा।।
अति का होना कहां भला है,
है सर्वत्र वर्जते अति को।
कविता खुद रचती है कवि को।।

रचनाये चुनाव करती है,
किससे कब क्या है लिखवाना।
लिखने वाले के सर चढ़ कर
बुनती है फिर ताना बाना ।।
उनकी संवेदना जगा कर,
त्वरित बदल देती है मति को।
रचना खुद रचती है कवि को।।

कालजयी रचनाओं से ही
रचनाकार अमर होता है।
वही ये सम्भव कर पाता है,
ईश हाथ जिस पर होता है।।
कहाँ रोक पाते है बादल,
भला निकलने से उस रवि को।
रचना खुद रचती है कवि को।।

रचना जब आने लगती है,
हृदय में स्पंदन होता है।
भाव भरे मकरन्द लिए फिर
शब्द शब्द चन्दन होता है।।
उठी 'प्रीत' की ज्वाला मन मे,
अग्नि स्वयं ले लेती हवि को।
रचना खुद रचती है कवि को।।

संतोष कुमार 'प्रीत'

केशव शरण की कविताएँ

सुरमई छाँव

चमड़ी जलाती
चौंधियाती धूप में
चला जा रहा हूँ
और बहुत सुकून पा रहा हूँ
जहाँ सुरमई छाँव है

दूर मेरा गाँव है

जगह-जगह
रास्ते के पेड़ों की
सुरमई छाँव यह
एक दैविक गोद जैसी है
जिसमें बैठो तो
पवन बयार अपने पल्लू से
पसीना पोंछ देती है

यहाँ से गुज़रते हुए

देखो-
कितनी हसीन इमारतें हैं
कितने हसीन और जहीन लोग
इनमें रह रहे हैं

अब याद भी नहीं आतीं झोंपड़ियाँ
और उनके सामने छाँव में
खेती-गृहस्थी के लिए विभिन्न औज़ार और
सामान
बनाते स्त्री-पुरूष

यहाँ से गुज़रते हुए
विकास की बहार दिखाई देती है
परन्तु बंद-बंद
महुए का खुला जंगल नहीं
पवन में हिलता मंद-मंद

चुनार में

आप चुनार में हैं

गंगा की
विशिष्ट मिट्टी
और पहाड़ के पत्थर
इसे ले गए थे शोहरत के शिखर पर

यहाँ बने
चीनी मिट्टी के पात्र
और पत्थर के शिल्प
सराहे गए सारी दुनिया में

ज़माना था वह देशज कला का
न कि व्यावसायिक बला का

यहाँ अब कुछ बन नहीं रहा है
सिर्फ़ गंगा की मिट्टी
और पहाड़ के पत्थर
बाहर जा रहे हैं

पहाड़ कटोरा बन गए हैं
मगर उनमें
एक सिक्का नहीं डाल रहा है कोई

पैसे का पहाड़

वह जो देखा था
पैसे का पहाड़
जिस पर चढ़ते ही
धँसने लगा था अंदर
मर ही जाता
दम घुटने से
अगर नींद टूट न पाती।

सच्चा है
यह माटी-पत्थर का पहाड़
और कितना अच्छा है
जो उठाता ही चला जाता है ऊपर
और वो हवा खिलाता है
कि जान आ जाती।

पैसे का पहाड़
सच का होता
तो भी इतना ठोस, भारी
सुन्दर और परोपकारी
ना होता!

~

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

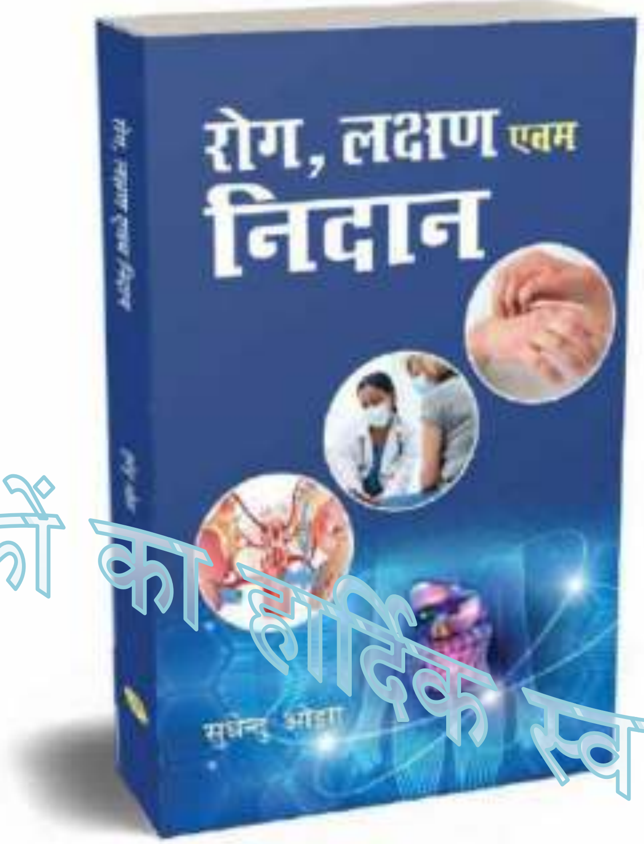

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-7-2

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 190

Price : 150/-

Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

बंजर और खेत

बंजर से खेतों की तुलना
पौधों को मंजूर नहीं है

मिट्टी तो मिट्टी होती है
कहने वाले लोग बहुत हैं
लेकिन अन्तर क्या होता है
यादों में संजोग बहुत हैं

कुछ भी हो पर खेती अपनी
बंजर जैसी क्रूर नहीं है

बन आई मोथा मदार की
पीछे बाँस बबूल खड़े हैं
साथ -साथ कुछ तरकुल भी हैं
जो पैदाइश से लंगड़े हैं

बस इतना सन्तोष बचा है
उनके साथ धतूर नहीं है

इधर गाँव में वोट पड़ रहा
सबसे ज्यादा कौन हरा है
और उधर बंजर वालों का
हद से भी मजबूत धड़ा है

सोच रहा है रेड़ मेड़ पर
उसकी दिल्ली दूर नहीं है

जो जीतेगा हरा रहेगा
हारेगा वो छंट जायेगा
खाद और पानी का क्या है
वक्त जरूरत बंट जायेगा

कौन कहेगा सारा किस्सा
इस युग का नासूर नहीं है

खून सने तर्क

जीन्स पहन कर गारा ढोते
घुने हुए सपने
पत्तों की किस्मत पर देखे
रोते हुए तने

हर पत्ते का रंग अलग है
हल्का या गाढ़ा
देखा नहीं कभी आँखों ने
जल का बँटवारा

छाया का व्यापार कर रहे
मोटे पेड़ घने

ऊसर और बबूल पड़ गये
सावन के पल्ले
बीजू आम हो गये कलमी
फूट रहे कल्ले

तेज धूप की भेंट चढ़ गये
कुछ पौधे चिकने

बहस चल रही फलदारों में
कौन अधिक मीठा
उधर खाद पानी का कोटा
काँटों ने जीता

तर्कों की सूरत से लगता
सब हैं खून सने

दलदल

नया नया पीपल का पत्ता
हद से कुछ ज्यादा चंचल है
आँखों में रंगों की दुनिया
सपनों में कल की हलचल है

अभी लाल से हरा हुआ है
भले बुरे का ज्ञान नहीं है
नहीं पता मन्दिर में बैठा
हर पत्थर भगवान नहीं है

पूजा घर के रखवालों में
घिसी हुई ढीली सांकल है

साँपों के खिलाफ चूहों को
मिला नेवलों का संरक्षण
खाते रहते मनोयोग से
मन्दिर का सब अक्षत चन्दन

अब रह गया अखाड़ा बनकर
पुरखों का पावन स्थल है

इसे बताने वाला कोई
मन्दिर का इतिहास नहीं है
भक्तों को भी अनहोनी का
रत्ती भर आभास नहीं है

निगल रहा है पूरा मन्दिर
चूहों से बढ़ता दलदल है

सूर्य प्रकाश मिश्र

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : **978-81-964179-7-0**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 154

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

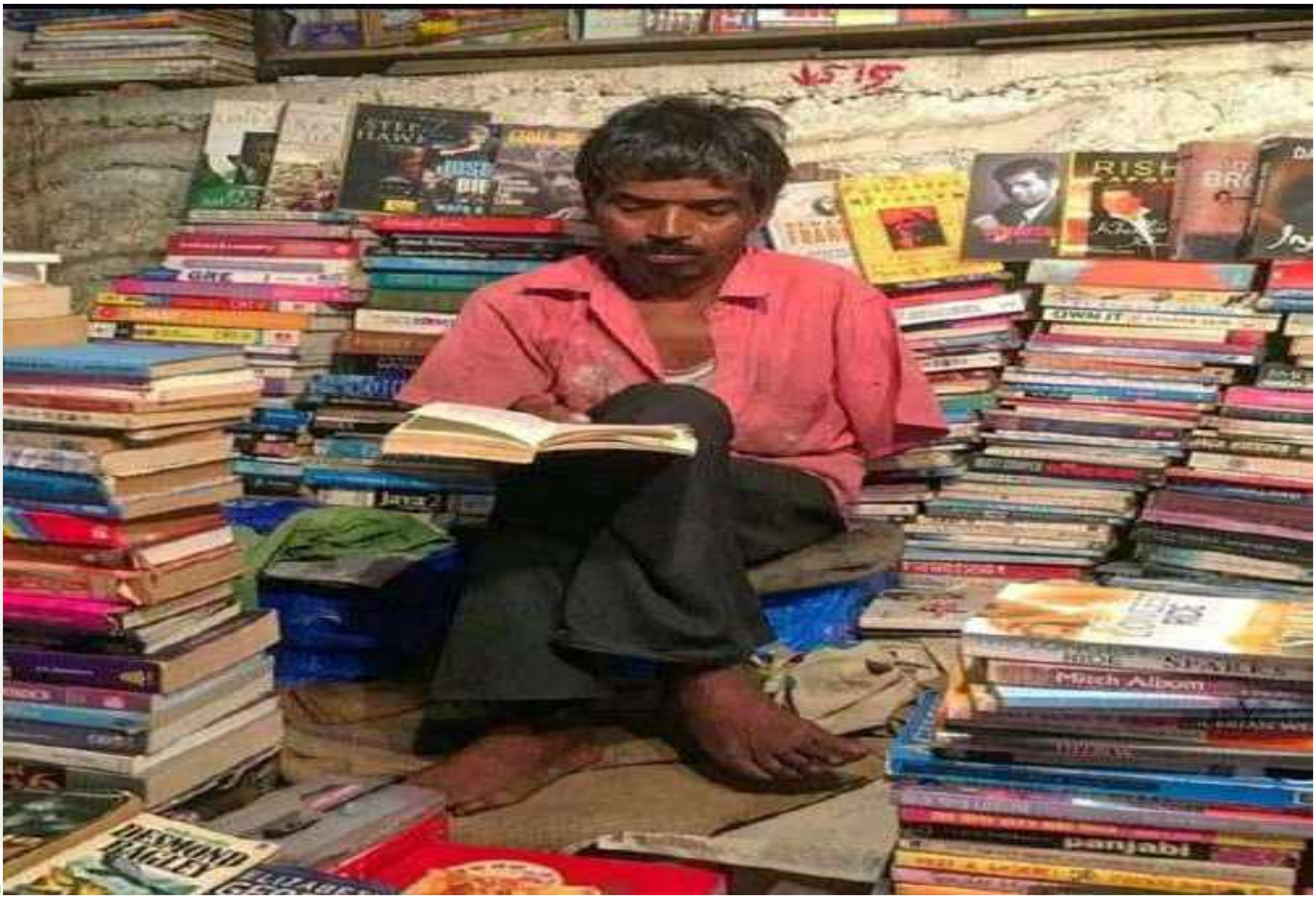

साहित्य का वर्तमान परिवेश

आमतौर पर किसी भी पुस्तक में सुप्रसिद्ध व्यक्तियों, लेखकों, शिक्षाविदों से भूमिका लिखवाने का चलन-सा है। पुस्तक का सारांश कुछ पन्नो में समादृत हो जाता है। पठन के लिहाज से अति उत्तम भी है। अच्छी और ईमानदार भूमिका से किताब के भीतरी पन्नों का सौंदर्य निखर आता है। मेरी अनेक पुस्तकों में भूमिका, समीक्षा विद्वानों ने लिखी है। फिर भी एक महत्वपूर्ण विंदु अक्सर छूट जाता है, सभी से, मुझसे भी। वह है लेखक के उस मनःस्थिति को व्याख्यायित कर पाना, जिससे रूबरू होता हुआ, लड़ता हुआ वह साहित्य विशेष का सृजन करता है।

कोई भी, आरामदेह छाँव में बैठकर, धूप में पसीना बहाते हुए किसान के श्रम का मूल्यांकन कैसे कर सकता है? भवन निर्माण के काम में लगे सिर में मसाला उठाये, फावड़ा

रामानुज अनुज

-बेलचा से गिट्टी सीमेंट उलीच-उलीच कर मिश्रण तैयार करते हुए श्रमिक के देह से चुचुआते हुए पसीने के रंग-गन्ध को कोई दूर से नहीं देख-समझ सकता है। नजदीक जाकर उसके साथ कुछ पल बिताने के पश्चात ही श्रम की देह से निकले हुये पानी की तासीर समझ में आएगी।
एक ईमानदार लेखक यत्र-तत्र की यायावरी करता है, परकाया प्रवेश करता है, फिर वहाँ मिले भाव-कुभाव को पेजों में उतरता है। इतने बड़े श्रम-साध्य काम की कैसे समीक्षा हो? सड़क निर्माण में लगे मजदूर के श्रम की सार्थक समीक्षा तो वही इंजीनियर कर सकता है, जो उस मजदूर से साथ-साथ दिन बिताता है। इन सबके बावजूद भी अस्वीकारोक्ति और अविश्वसनीयता के जोखिम बने रहते है।

आजकल जल्दी शोहरत की चाहत में नए

लेखकों द्वारा कुछ ऐसा साहित्य रचा जा रहा है, जिसे सभ्य समाज कभी स्वीकार नहीं करेगा। समाज द्वारा ख़ारिज वे शब्द जो सुनने में अशोभनीय और अमर्यादित हैं, आधुनिकता और प्रगतिशीलता के नाम पर अग्राह्य शब्दों को पुस्तक में ठूँस-ठूँस कर भर देने से कोई कृति उत्सुकता भले जगा दे, कुछ पलों के लिए पाठक को रोमांचित या अचंभित कर दे, दूरगामी परिणाम कुछ अच्छा हासिल नहीं होने वाला है।

ऐसा लेखन वर्तमान, भूत और भविष्य तीनों काल खण्डों के लिए अनुपयोगी होगा। जब भाव-विचार हृदय से निकलना बन्द हो जाते हैं, तब अभिव्यक्ति का संकट पैदा हो जाता है। शब्दकोष लबालब होने के बावजूद भी खाली-खाली लगता है। यह रोग अध्ययन की कमी के फलस्वरूप पैदा होता है। यदि गाली-गलौज वाले अशोभनीय शब्दों से बचना है, तो साहित्य का पठन फिर मनन-चिंतन जरूरी है। अपने पूर्व के रचनाकारों को पढ़ना और उनके रचनाकर्म को समझना अतिआवश्यक है, तभी शब्दकोश मिलेंगे, अच्छा लिखने की प्रेरणा मिलेगी। आज प्रसारण और प्रकाशन का रास्ता सुगम है, प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों को लिखकर सुदूर तक विस्तारित कर रहा है, किन्तु जिस सौंदर्य, रूप-लावण्य की आशा पाठक करता है, वह उसे प्राप्त नहीं होती है।

ऐसा क्यों है? सीधा सा उत्तर है, रचनाकार में अध्ययन की कमी है, उन शब्दों से परिचय नहीं है जो मन को मोह लेते हैं। इसके कारण में सस्ती और शीघ्र मिलने वाली प्रसिद्धि का रोग है जो लेखक मन विकसित होने के पहले ही मृत्यु देता है। कमोबेश वे साहित्यिक व्यापारी भी कम दोषी नहीं हैं, जो मोटे कागज में सुविधा शुल्क लेकर सम्मान बाँटते फिर रहे हैं।

अच्छा साहित्य जीवन जीने की शैली बताता है, विपरीत हालातों से लड़ने का जज्बा देता है, आदमी-आदमी से मध्य मुहब्बत परोसता है, चाहे वह कोई भी हो। आज बहुत ज्यादा लिखा जा रहा है, जिसमें अध्ययन और चिंतन की कमी साफ झलकती है। जरूरत हैं, पहले साहित्य के सानिध्य में कुल पल बिताइए, फिर मनन-चिंतन कीजिए, यकीन मानिए बहुत अच्छी फीलिंग आएगी। नव सर्जना के शब्द यहीं से मिलेंगे। तदनु, जो विलेखन होगा, वह लेखक का हल्फ़िया बयान और भविष्य का दस्तावेज़ होगा।

शायद वो ऐसा वृत्तांत था कोई
जब रोया था आंखों में डूब कर मैं भी।

हताशा में इक अनवरत चिंता सी विकास
नक्षत्रों सा बदल गए आरज़ू हसरत और उम्मीद ।

उचट गई रात के अंतिम पहर की नींद
एक आँसू ने डुबोया था मुझ को जब।

ऐसा नहीं कि पहली बार लिख रहा मैं
मनमाने व्यवहार से सालाना त्योहार हुए आँसू भी ।

झूठ पे सच की चादर डाल मुस्कुरा रहे हैं
जैसे आख़िरी हैं दाढ़ी, दवाइयां, और विलाप ।

विकास तिवारी

जय जय हो

हमारे देश भारत का सतत हर पल अमृतमय हो।
हमारी मातृ भू की सर्वदा, सर्वत्र जय जय हो।

यहां बच्चे खिलौना मानते हैं सिंह शावक को।
कभी मुख में भरा करते दहकते सौर पावक को।
अमर होते कभी खाकर वनों में घास की रोटी।
न्योछावर देश पर होना यहाँ की बात है छोटी।

रहित हो शस्त्र से केवल ध्वजाएँ धम्म की लेकर।
जगत को जीतते हैं हम हमारे प्रेम के बल पर।
जहाँ तक हो सका हमने हमेशा युद्ध को टाला।
अगर माना नहीं दुश्मन उतारा वक्ष में भाला।

कहीं, कोई हमारा शत्रु हो, उसकी पराजय हो।
हमारी मातृ भू की सर्वदा, सर्वत्र जय जय हो।

अनाजों से धनी समतल,अकथ ऊर्जा पहाड़ों में।
भरा भंडार है अनमोल खनिजों का पठारों में।
कृषक उर्वर धरा पर नित्य प्रति सोना उगाते हैं।
सभी मिलकर सतत इस देश को सुन्दर बनाते हैं।

सुधा की धार ले नदियाँ बहा करतीं यहाँ अविरल।
पहुँचता है अमृत बनकर सदा हर गेह गंगाजल।
हिमालय है मुकुट सिर पर, लहरता पाँव में सागर।
सुहाती है हरी धरती, सकल भूगोल है सुन्दर।

हमारा चित्र है ऐसा कि ज्यों बट वृक्ष अक्षय हो।
हमारी मातृ भू की सर्वदा, सर्वत्र जय जय हो।
नए डिजिटल ज़माने का बना यह देश ध्रुवतारा।
हमारे ज्ञान का सम्मान करता है जगत सारा।

कुशल तकनीक के बल हम शिखर पर पाँव धरते हैं
धरा सागर गगन में कामयाबी प्राप्त करते हैं।
बना निर्माण का यह गढ़ बुलन्दी पर सितारा है।
नया भारत, नया सम्बल, नया परिचय हमारा है।

तिरंगा छू रहा है नभ, अतुल इसकी कहानी है।
हमारी शौर्य गाथा की यही असली निशानी है।
जगत गुरु हम, हमारा सौ युगों तक एक परिचय हो।
हमारी मातृ भू की सर्वदा, सर्वत्र जय जय हो।

विकास पाण्डेय विदीप्त

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री जी को समर्पित

विश्व मे ऊंचा रखा था जिसने
भारत माँ के भाल को।
नमन हमारा राष्ट्रपिता को
और गुदड़ी के लाल को।।

बहुत कोशिशें की गोरो ने
बल से सबक सिखाने को,
मगर नही मजबूर कर सके
जिनको शस्त्र उठाने को,

भेद न पाए सत्य अहिँसा
सत्याग्रह के ढाल को।
नमन हमारा राष्ट्रपिता को
और गुदड़ी के लाल को।।

छोटे कद के भी रहकर ये
काम सदा ही बड़े किये,
जय जवान और जय किसान का
ओजस्वी नारा ये दिए,

मात दिया था निज कौशल से
दुश्मन के हर चाल को।
नमन हमारा राष्ट्रपिता को
और गुदड़ी के लाल को।।

आज ही के दिन माँ भारती ने
धरती को दो लाल दिए,
अमर हो गए विश्व मे दोनो
'प्रीत' ये ऐसा कार्य किये ,

टाल न पाए समय से पहले
आने वाले काल को।
नमन हमारा राष्ट्रपिता को
और गुदड़ी के लाल को।।

सन्तोष कुमार 'प्रीत'

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-9-4**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 208

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

द्वैत-अद्वैत मीमांसा के चिंतन धरातल पर रचित एक अद्भुत काव्य कृति – सुनो राधिके सुनो

समीक्षक : सुधेंदु ओझा
पुस्तक : सुनो राधिके सुनो (खंड काव्य)
लेखक : विष्णु सक्सेना
प्रथम संस्करण : 2021 मूल्य : रु 250
प्रष्ठ : 122 (सजिल्द)
प्रकाशक : भारतीय ज्ञान पीठ, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली – 110 003

'सुनो राधिके सुनो' चर्चित और लोकप्रिय कवि विष्णु सक्सेना का दूसरा खंड काव्य है, जिसे उ प्र हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा 'जय शंकर प्रसाद सम्मान -2021' व 75 हज़ार की राशि के साथ सम्मानित किया जा चुका है | सक्सेना जी का पहला खंड काव्य 'अक्षर हो तुम' भी हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा ' श्रेष्ठ काव्य कृति सम्मान – 2014 ' व 21 हज़ार की राशि से सम्मानित किया जा चुका है |

'सुनो राधिके सुनो' द्वैत – अद्वैत मीमांसा के चिन्तन धरातल पर रची गई एक अद्भुत काव्यात्मक कृति है | इसमें लेखक ने दर्शन शास्त्र के इस मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट किया है कि सच्चिदानंद की मूल प्रकृति ही सत्तात्मिका , ज्ञानात्मिका और आनंदात्मिका स्वरुप में सर्वत्र पसरी हुई है | वही महामाया संघिनी , संविद और आहाल्दिनी शक्ति के रूप में अनेक प्रकार से प्रकट होती है | यही निर्गुण – निराकार और सगुण – साकार के रूप में उत्पत्ति , पालन व संहार करते हुए अविर्तिरोभाव या ' भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ' का कारण बनती है | माया –मायापति , प्रकृति – पुरुष की यह नित्य योग – संयोग – वियोग जन्य दिव्य क्रीडा ही लीला है | इस पुस्तक के ' प्रेम भाव ' , ' प्रतीक्षा ' व ' मोह ' सर्ग में इसी का दर्शन होता है |

इस खंड काव्य का प्रमुख विषय परम रसाम्बुधि प्रेम स्वरूपा आहाल्दिनी शक्ति हैं | जो कारण , सूक्ष्म , स्थूल रूप में व साधन - साधना – साध्य रूप में स्वयं ही प्रसरित हैं | श्री राधा कृष्ण प्रेम भाव चित्रांकित करते हुए कवि कहता है – राधा जी भगवान श्री कृष्ण की स्नेह – श्यामा हैं | ' श्यामा ' इसलिए कि श्यामा कहने से केवल वर्ण – बोध ही नहीं होता , युवावस्था का भी बोध होता है – ' श्यामा यौवन ' , ' मध्यस्था ' | वे प्रभु की आद्या शक्ति हैं , आल्हादिनी शक्ति है , सृष्टि रचना में सहयोगिनी हैं , महामाया हैं , इसलिए सर्वतोभावेन परमसत्ता के साथ अभिन्न हैं |

परम सत्ता जब – जब सृष्टि की कामना करती है , एक से अनेक होना चाहती है , तो उसे सबसे पहले अद्वैत से द्वैत में प्रयाण करना पड़ता है | ' एकोअहं बहुस्याम ' का यही निहितार्थ है | आद्या शक्ति के बिना परम सत्ता अधूरी ही रहती है | इसीलिए राधा जी श्री कृष्ण की ' पूर्णा ' हैं | इस पूरकता को ही अर्धनारीश्वरत्व में व तंत्र साहित्य में शिव – शक्ति के अद्वैत रूप में प्रकट किया गया है | वैष्णवों की माधुर्य भक्ति में राधा – कृष्ण की युगलमूर्ति ने भारतीय संस्कृति की आधार शिला पुरुष – स्त्री की सहभागिता को स्थापित किया है |

' सुनो राधिके सुनो ' इस दिशा मे एक गंभीर प्रयास है | पुस्तक के आरम्भ में अभिन्नता सर्ग के प्रेम भाव में विष्णु सक्सेना लिखते हैं , ' हे आत्मयोगी - / मैं ,चिर संगिनी / रही तुम्हारी / आदि काल से / अनंत काल से , / सृष्टि के हर संकल्प चक्र की / रही साक्षी ! // चक्र तुम्हारा - जब भी चलता / पूर्णता उसकी / मैं ही करती , / मैं ही तो / धुरी तुम्हारे / हर संकल्प की ! // सत्य यही है / रमी हुई मैं / तुम मैं ही तो / मुझ में भी / रमे हुए तुम ! // लीला रूप में दृश्यमान हैं / भिन्न भिन्न हम , / भिन्न भिन्न दिख कर भी / हैं अभिन्न हम / अनंत काल से |

आद्या शक्ति का यही भाव लता भाव में भी परिवर्तित हो जाता है | और कवि कहता है – ' मैंने ही तो / पुष्पों में / पराग बन कर / आनंदित होकर / वास किया है | ताकि अलि भी / आ आकर / पराग मधु का पान करें , / प्रगाढ़ चुम्बन / मधुर आलिंगन / करते करते / तन से मन से / एक दूजे को / अन्तर्सुख प्रदान करें |

अद्वैत से द्वैत की प्रक्रिया है यह | पहले भी स्पष्ट किया गया गया है कि अद्वैत से द्वैत में आने के लिए इस प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है| सुनो राधिके सुनो पुस्तक के उत्तरार्ध में भाषा विचार व शिल्प से आत्म निष्ठ है , पर पूर्वार्ध में कवि भाषा के प्रति उतना सजग नही रह पाया है जिसकी आवश्यकता इस प्रकार के गंभीर चिन्तन मनन के काव्य में अपेक्षित है |

जैसे जैसे वह आगे बढते हैं वह भाषा के प्रति भी आग्रही हो चलते हैं और भाषा निश्चित रूप से तत्व चिन्तन के अनुरूप उसी के समानांतर चलती है और शब्द संयोजन भी उसी स्तर का हो जाता है | तब लगता है कि हम किसी गंभीर प्रकृति के काव्य को पढ़ रहे हैं ,जिसमें चिन्तन है , मनन है ,योग है ,माया है और समझने को बहुत कुछ है | एक बानगी देखिये – ' आहट ' सर्ग में वह कहते हैं , ' प्रिय राधिके - / मन हुआ / मुक्त छोड़ दूं / मैं – अपने मन को / सहज हो जाऊं / तितली बन - / उड़ जाऊं / बस उड़ता ही जाऊं ! // उड़ते उड़ते / बीत चुके इन तीन युगों की / पूर्व बेला में / पहुँच गया मैं ! // देखा / महादेव की अनंत समाधि / लगी हुई थी , / कामदेव ने / देव हितार्थ / बर्फ के निर्जन में भी / मंगल कर डाला था | / कम मोहित प्रेम बाण को / महादेव पर डाला था , / ओह - / कैसा मन भावन / दृश्य था वह ? '

कवि ने इस माध्यम से एक रूपक , एक बिम्ब व एक चित्र खींचा है जो मन को छूता है | पुस्तक पठनीय है व धीर गंभीर पाठकों के मनन योग्य है |

इन्ही शुभ कामनाओं के साथ |

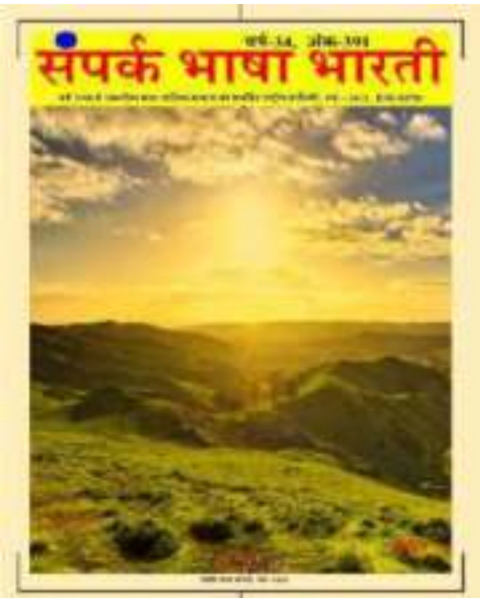

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com